Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

"जेहवो बीज बोवे,
तेहवा फल लागें।

जैसे बीज बोता है, वैसे
फल लगते हैं।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 39 • 30 जून - 06 जुलाई, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 28-06-2025 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

संतों की प्रेरणा से बन सकते हैं पतित से पावन : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध है जीवन जीने की कला : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address
Here

योग के माध्यम से संभव है शक्ति और शांति की प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर महायोगी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने किया अहमदाबाद नगर में मंगल प्रवेश

तपोवन।
21 जून, 2025

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर, योग निरोध की प्रेरणा प्रदान करने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ अहमदाबाद की सीमा में मंगल प्रवेश किया। तपोवन स्थित मोहनलाल परमार के स्व. बंगले में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। अहमदाबाद के श्रावक-श्राविका समाज ने भावपूर्ण स्वागत एवं अभिवंदन किया।

मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन में शक्ति का अत्यंत महत्व है। शक्ति होने पर ही व्यक्ति सेवा, साधना और कर्तव्यपालन कर सकता है। जैन दर्शन में वर्णित आठ कर्मों में अंतिम कर्म है—अंतराय कर्म, जो व्यक्ति की शक्ति और ऊर्जा को प्रभावित करता है। जब अंतराय कर्म का क्षयोपशम होता है, तो व्यक्ति के मार्ग की बाधाएँ हट सकती हैं।

शक्ति कई रूपों में हो सकती है—शारीरिक, मानसिक, वाचिक अथवा सामाजिक। यदि किसी को विशेष शक्ति प्राप्त हो, तो उसे दो बातों पर ध्यान देना चाहिए—पहला, शक्ति का दुरुपयोग न हो; और दूसरा, उसका सदुपयोग हो। अध्यात्म जगत में भी शक्ति का विशेष स्थान है।

आचार्यश्री ने कहा कि योग साधना जीवन की श्रेष्ठ संपत्ति बन सकती है। योग-विरहित जीवन अधूरा है। योग के माध्यम से व्यक्ति को शक्ति और शांति—दोनों की प्राप्ति हो सकती है। गुरुदेव तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञजी को जैन योग के पुनरुद्धारक के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया और उसका विस्तार किया। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अंतर्गत उसकी स्वर्णजयंती मनाई जा रही है। प्रेक्षाध्यान भी योग की एक सशक्त विधा है।

योग केवल आसन और प्राणायाम नहीं, बल्कि जीवन की प्रत्येक क्रिया में समाहित हो सकता है। चलना 'गमन योग' है। भावना, चिन्तन और प्रतिक्रमण भी योग की श्रेणी में आते हैं।

एक समय में एक ही कार्य करने से चित्त एकाग्र होता है, जो योग साधना का मूल है। योग हमें मोक्ष मार्ग की ओर भी ले जाता है। (शेष पेज 14 पर)

विलक्षण युगपुरुष थे तुलसी और महाप्रज्ञ : आचार्यश्री महाश्रमण

वर्तमान अधिशास्ता ने दो-दो गुरुओं की स्मृति कर दी भावांजलि

अहमदाबाद।
23 जून, 2025

संयम के महासागर, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी अहमदाबाद के उपनगरों का विहार करते हुए ठाकोरभाई देसाई हॉल में पधारे। परिसर में बने ऑडिटोरियम में आयोजित मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने अपने प्रेरणा-पाथेय में फरमाया कि प्रज्ञा का जीवन में अत्यंत महत्व है। जब ज्ञान राग-द्वेष से मुक्त होता है, तभी वह निर्मल होता है। ज्ञान के साथ राग-द्वेष के साथ जुड़ जाता है तो वह ज्ञान मलीन हो जाता है। जो ज्ञान राग-द्वेष से मुक्त होता है, वह मात्र ज्ञान है। एक आदमी धर्मग्रन्थ पढ़ता है और वैराग्य भाव के साथ उसका अध्ययन करता है, वह अमोह की ओर आगे बढ़ सकता है। ज्ञान के साथ राग-द्वेष जुड़ता है तो वह अशुभग योग हो जाता है। मन, वचन और काया की प्रवृत्तियां उज्जवल भी और मैली भी हो सकती हैं। मोह का योग हो गया तो योग अशुभ बन गया, मोह कर्म का वियोग हो गया तो योग उज्जवल रह सकता है।

पूज्यवर ने आगे कहा कि — आज आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी — आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्मदिवस है। आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी को टमकोर में उनका प्राकट्य हुआ। इसी महीने में आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण हुआ था। आज एक नया संयोग बन गया है कि दिनांक के हिसाब से आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस है और आज आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी आ गई तो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्मदिवस भी आज के दिन आ गया। एक महान आचार्य का प्रस्थान आज के दिन हुआ तो एक आचार्य का जन्म आज के दिन हुआ। जन्म और महाप्रयाण का मानों जोड़ा है। जन्म अकेला नहीं आता, वह मृत्यु को भी अपने साथ लेकर ही आता है, किन्तु

मृत्यु का प्राकट्य कब होगा, यह आने पर पता चलता है। आज का दिन हमारे दोनों सुगुरुओं से जुड़ा हुआ है।

आचार्यश्री तुलसी जैन शासन के विशिष्ट आचार्य थे। उनका कार्य क्षेत्र जैन शासन की सीमा से पार का भी था। मानव जाति के लिए भी उन्होंने कार्य किया था। तेरापंथ के आचार्य थे तो तेरापंथ के उन्होंने कितना श्रम और समय लगाया। (शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जून - 06 जुलाई, 2025

धर्म के प्रति रहे अडिग निष्ठा : आचार्यश्री महाश्रमण

घटलोडिया, अहमदाबाद।
22 जून, 2025

तेरापंथ के महासूर्य, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी अहमदाबाद के उत्तर क्षेत्र से विहार करते हुए पश्चिम क्षेत्र के घटलोडिया स्थित शायोना इंटरनेशनल स्कूल में पधारे। पूज्यवर ने पावन प्रेरणा-पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन में समर्पण और भक्ति का अत्यंत महत्व है। जब व्यक्ति किसी को अपना आराध्य, गुरु या धर्मस्वरूप स्वीकार कर लेता है, तो उसके प्रति स्वाभाविक रूप से भक्ति और समर्पण का भाव जागृत हो जाता है। जहां समर्पण होता है, वहां कोई किंतु-परंतु नहीं रहता।

समर्पण और भक्ति व्यक्ति, सिद्धांत या नियम किसी के प्रति भी हो सकती है। संघ और शासन के प्रति भी श्रद्धा और निष्ठा का भाव होना चाहिए। यदि कठिनाइयों में भी समर्पण अडिग बना रहे, तो वही सच्चा समर्पण कहा जाता है। सच्चे समर्पण में स्वार्थ नहीं होता। समर्पण के विविध क्षेत्र हो सकते हैं—आराध्य, अर्हत, सिद्ध और शुद्ध साधुजनों के प्रति।

शास्त्रों में कहा गया है कि चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया जाए। नमस्कार करना भी भक्ति का एक रूप है। त्याग और संयम के समक्ष स्वयं देवता भी मस्तक झुकाते हैं। जो मन से सदैव धर्म में रमा रहता है, वह नमनीय होता है। णमोकार महामंत्र भी भक्ति का सर्वश्रेष्ठ पाठ है। एक बार इसका पाठ करने से पाँच बार नमस्कार हो जाता है। यह मंत्र विशुद्ध धर्ममय है—उसमें कहीं भी भौतिकता या लोकोन्मुख भावना नहीं है।

अपने नियमों और व्रतों के प्रति भी भक्ति होनी चाहिए। श्रावक अर्हन्नक का उदाहरण बताता है कि संकट आने पर भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म अत्यंत ऊंची और गहन साधना का विषय है। यदि धर्म छूट गया, तो भव-भव में भटकना पड़ेगा। शरीर छूट जाए—कोई बात नहीं; पर धर्म कभी न छूटे। हमारे अंतर्मन में समर्पण और भक्ति का भाव बना रहे। आत्मा के उत्थान हेतु धर्म के प्रति आस्था, गुरु के प्रति श्रद्धा और देव के प्रति समर्पण ही कल्याणकारी पथ है। कठिनाइयाँ आती हैं, पर निकल भी जाती हैं। संकट परीक्षा की घड़ी होते हैं, पर धर्म के प्रति हमारी निष्ठा अडिग रहनी चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में पश्चिम सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष गौतम बाफणा, शायोना स्कूल के सुरेशभाई पटेल और जयंतिभाई भटेवरा ने भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत एवं कन्या मंडल की भक्ति प्रस्तुति हुई। अणुव्रत विश्व भारती द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय सेमिनार के समापन समारोह में प्रताप दुगड़ ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि श्री दिनेशकुमारजी ने किया।

संतों की प्रेरणा से बन सकते हैं पतित से पावन : आचार्यश्री महाश्रमण

चन्द्राला।
18 जून, 2025

जन-जन के उद्धारक, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी प्रातः लगभग 10 किमी का विहार कर चन्द्राला स्थित ज्योति विद्या मंदिर के प्रांगण में पधारे। अमृतमय देशना प्रदान करते हुए परम पूज्य ने प्रेरणा दी कि साधु-संतों का गांवों में प्रवास होता है। उनके द्वारा प्रवचन और सत्संग की प्रभावशाली परंपरा चलती है, जिसमें अनेक श्रद्धालु भागीदार बनते हैं और श्रद्धा से श्रवण करते हैं।

एक साधु जब बोलता है, तो अनेक श्रोता उसे सुनते हैं। वक्ता की वाणी से ज्ञान का प्रसार होता है और श्रोतागण उस ज्ञान को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। जैसे विद्यालयों में विद्या का आदान-प्रदान होता है, वैसे ही सत्संग भी ज्ञान की प्राप्ति का एक केंद्र बन जाता है। साधु की वाणी उसकी साधना से प्रभावित होती है, जो श्रोता के मन-मस्तिष्क को गहराई तक छू सकती है।

वक्ता अनेक प्रकार के होते हैं, परंतु हर वक्ता के प्रति समान श्रद्धा भाव हो, यह आवश्यक नहीं। किंतु जब वह वक्ता त्यागी-संयमी संत हो, तो उसकी वाणी स्वतः ही प्रभावशाली बन जाती है। आस्था के स्थान बनने पर श्रावक संतों के सामान्य से निर्देश को भी आदरपूर्वक सुनते हैं और उस पर चिंतन करते हैं। गुरुओं की कही हुई बातों को सुनकर हर्ष की अनुभूति होती है।

जब वचन, श्रवण और श्रद्धा—ये तीनों तत्व एक साथ उपस्थित होते हैं और वक्ता में भी करुणा और अनुग्रह का भाव होता है, तब कल्याणकारी स्थिति निर्मित हो सकती है। संतों के प्रति श्रद्धा का एक प्रमुख कारण उनकी तपस्या और साधना होती है। यदि वे त्यागी, वैरागी और ज्ञानी हों, तो उनका संग दुर्लभ और अत्यंत लाभदायक होता है। थोड़े समय की साधु-संगति भी पापों को हर सकती है और जीवन की दिशा-दशा परिवर्तित कर सकती है।

संतों की प्रेरणा से पापी भी पाप त्याग सकता है और पतित से पावन बन सकता है। जिस धरती पर संतों का पदार्पण होता है, वह भूमि भी पवित्र बन जाती है। जब साधु पदयात्रा करते हैं, तो छोटे-छोटे गांवों में भी प्रेरणा का संचार होता है। प्रत्यक्ष संपर्क से धर्म का उपकार और प्रभाव अधिक होता है। पदयात्रा अपने आप में एक तपस्या है। वाहन का परित्याग संयम का प्रतीक है और यह अहिंसा की साधना का भी माध्यम बनता है।

पदयात्रा से जनहित का कार्य होता है। त्याग अपने आप में आध्यात्मिकता है। हमें आगे की सोच रखनी चाहिए और धर्म का संचय करना चाहिए। यदि जीवन में अहिंसा, संयम, नैतिकता और नशामुक्ति आ जाए, तो निश्चित ही हमारा कल्याण हो सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में महावीर हिरण, चांदनी सिसोदिया, विद्या मंदिर के प्रमुख दशरथ पटेल, प्रिंसिपल राकेशकुमार पटेल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। स्थानीय महिला मंडल, प्रांतीज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मंगल भावना समारोह आयोजित

इरोड। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महत्ती कृपा कर इरोड के वरिष्ठ श्रावक, प्रवक्ता उपासक हनुमानमल दुगड को मुमुक्षु के रूप में स्वीकार किया। इस उपलक्ष में स्थानीय तेरापंथ भवन इरोड में मुमुक्षु हनुमानमल दुगड का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, महिला मण्डल अध्यक्षा पिंकी भंसाली, युवक परिषद् अध्यक्ष महेन्द्र भंसाली, हीरालाल चौपड़ा, महासभा कार्यकारिणी सदस्य सुरेन्द्र भंडारी, धर्मचंद बोथरा, उपासक रमेश पटावरी, जैन संस्कारक राजेश बोथरा, हेमंत दुग्गड, पूर्णिमा कठोतिया, मंजुदेवी बोथरा एवं स्थानकवासी जैन संघ के मंत्री महेन्द्र भंसाली ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि वे आचार्य प्रवर की अनुशासना में सिंहवृत्ति से संयम की पालना करें। तेरापंथ सभा, युवक परिषद्, महिला मण्डल, स्थानकवासी जैन संघ, सीमन्धर स्वामी जैन संघ, गुरु राजेन्द्र सूरी जैन मन्दिर संघ, दिगम्बर जैन संघ एवं अन्य संघों द्वारा मुमुक्षु का सम्मान किया गया। वर्षीतप तपस्वी अभिषेक बोथरा का भी धर्म संघ की सभी संस्थाओ के पदाधिकारियों

विनय और वात्सल्य का भव्य रूप—आध्यात्मिक मिलन

उधना।

साध्वी राकेशकुमारीजी, प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी एवं उनके सहवर्तिनी साध्वीवृन्द का आध्यात्मिक मिलन तेरापंथ सभा भवन, उधना में संपन्न हुआ। इस विशेष अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में साध्वी राकेशकुमारीजी ने कहा कि आज केवल बाह्य नहीं, बल्कि अंतःभावों का मिलन हो रहा है। तेरापंथ संघ की पुण्य प्रवाहित परंपरा में विनय, ममता और वात्सल्य की अनुपम झलक देखने को मिलती है। उन्होंने कहा कि उनका सौभाग्य रहा कि उन्हें आचार्य श्री तुलसी युग में दीक्षा मिली, शासनमाता की छत्रछाया प्राप्त हुई और साध्वी रतनकंवरजी का सान्निध्य मिला।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी एक मेधावी एवं प्रबुद्ध साध्वी के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने समण श्रेणी में नियोजिका, उपकुलपति जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए अनेक व्यक्तित्वों का निर्माण किया। उनकी संघनिष्ठा अत्यंत सराहनीय रही है। साध्वीश्री ने आगामी चातुर्मास के लिए मंगलकामनाएं भी प्रेषित कीं।

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संतों का मिलन आत्मिक प्रेरणा का स्रोत होता है और यह आत्मप्रेम की भावना का द्योतक है। तेरापंथ धर्मसंघ की यह सुंदर परंपरा हम सभी को आत्मिक संतोष प्रदान करती है। आज साध्वी राकेशकुमारीजी के दर्शन कर हमें गहन प्रसन्नता और तृप्ति की अनुभूति हो रही है। आपकी पावन आत्मीय उपस्थिति मन को आनंदित करती है। उन्होंने साध्वी राकेशकुमारीजी को बारडोली में सफल चातुर्मास हेतु मंगल भावना प्रेषित की।

साध्वी राकेशकुमारीजी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की सहवर्तिनी साध्वियों ने सामूहिक संगान प्रस्तुत कर वातावरण को सुरम्य बना दिया। साध्वी विपुलयशाजी ने समण श्रेणी में अपने अनुभव साझा करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञाजी का गुणानुवाद किया और साध्वीवृन्द का हार्दिक स्वागत किया। साध्वी डॉ. राजुलप्रभाजी ने साध्वी राकेशकुमारीजी के सौम्य और प्रेरक व्यवहार की सराहना करते हुए कहा कि उनका कृपाभाव हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, उधना, बारडोली एवं नजदीकी क्षेत्रों से समागत बहनों ने विभिन्न स्वागत संगानों की प्रस्तुतियाँ दीं।

तेरापंथ सभा उधना के अध्यक्ष विमलकुमार चपलोत, तेयुप अध्यक्ष कमलेश बाफणा, मीडिया प्रभारी अर्जुन मेड़तपाल, महिला मंडल अध्यक्ष सोनू बाफणा आदि ने श्रद्धासिक्त स्वागत उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में श्रद्धालु समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा, उधना के कर्मठ मंत्री मुकेश बाबेल ने काव्यात्मक शैली में प्रभावशाली ढंग से किया।

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारम्भ

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेयुप अहमदाबाद द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारंभ अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से हुआ। इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रथम पवन माण्डोत, उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता, महामंत्री अमित नाहटा, संगठन मंत्री अमित सेठिया, प्रायोजक माण्डोत परिवार के सदस्यगण, अरविंद गोठी, तेयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष पंकज घीया, मंत्री जयकुमार छाजेड़, अभातेयुप परिवार, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण सहित अहमदाबाद की युवाशक्ति की गरिमामय उपस्थिति रही।

तेरापंथ-मेरापंथ प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में तेरापंथ-मेरापंथ प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा— 'जैन धर्म का नवीनतम और संगठित संस्करण तेरापंथ है, जिसके संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु हुए। यह कार्यशाला तेरापंथ को और अधिक गहराई व व्यापकता से जानने का माध्यम बनेगी। सभी प्रतिभागियों के लिए मंगलकामनाएं।'

साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरड़िया ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

महासभा के कोषाध्यक्ष मदन मरोठी ने कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएं दीं, जबकि उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने कार्यशाला की उद्देश्यपरक जानकारी साझा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

प्रेक्षाध्यान और चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत, तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में प्रेक्षा ध्यान एवं चित समाधि कार्यशालाओं का आयोजन हुआ।

प्रेक्षा वाहिनी के सौजन्य से आयोजित प्रेक्षाध्यान सत्र में प्रेक्षा प्रशिक्षक डालमकुमार सेठिया ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रभावशाली अभ्यास रेणु कोठारी द्वारा कराया गया। इस सत्र में लगभग 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

द्वितीय चरण में चित्त समाधि कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका शुभारंभ चित्त-समाधि गीत से हुआ। साध्वी सोमयशा जी ने चित्त की निर्मलता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'चित्त समाधि का अर्थ है – शांतिपूर्ण जीवन जीना।

जहां प्रेम होता है, सहिष्णुता और सहभागिता होती है, वहीं मानसिक शांति का वास होता है और वहीं चित्त की निर्मलता बनी रहती है।'

उन्होंने आगे कहा कि 'जैन दर्शन में समभाव और स्थितियों को सहन करना ही कर्म निर्जरा का मार्ग है, जो निर्मल चित्त के बिना संभव नहीं।'

साध्वी सरलयशा जी ने जीवन को समाधिमय बनाने के उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए, वहीं साध्वी ऋषिप्रभा जी ने सरल व प्रभावशाली प्रयोगों के माध्यम से उपस्थितजनों को लाभान्वित किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, सभा पदाधिकारी तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार 'प्रेक्षा प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर' तथा 'मातृत्व एक वरदान' विषय पर तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा कार्यशाला का आयोजन साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में शांतिनिकेतन प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालानी द्वारा मुख्य वक्ता डॉ दीप्ति के स्वागत के साथ हुई।

साध्वी विधिप्रज्ञा जी द्वारा प्रेक्षाध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण करवाया गया। महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष संतोष बोथरा द्वारा डॉक्टर दीप्ति वहल का संक्षिप्त परिचय दिया एवं डॉ दीप्ति ने गर्भावस्था के दौरान उचित रहन-सहन, खान पान एवं इस दौरान रखी जाने वाली सावधानियों से बहुत ही सहज एवं सरल तरीके से अवगत करवाया।

साध्वी लब्धियशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि सबसे पहले संस्कार गर्भ के अंदर आते हैं। गर्भ संस्कार एक शिशु का जीवन भर का व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं, और इसमें एक मां की भूमिका अहम है। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में इसे एक मां की अदृश्य पाठशाला बताया। सिर्फ भावनाएं ही नहीं, मां के भीतर की हर अनुभूति, हर स्पर्श, हर विचार शिशु के अंदर उतरता जाता है।

यह वह संगम है जहां श्रद्धा और विज्ञान एक मां के भीतर एक साथ पलते हैं। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष अंजू ललवानी द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जून - 06 जुलाई, 2025

संक्षिप्त खबर

हरित सोच के साथ स्वच्छ भविष्य की ओर एक कदम

छत्रपति संभाजीनगर। पर्यावरण दिवस के अवसर पर नई अणुव्रत वाटिका (राधा मोहन कॉलोनी) में ₹हरित सोच - स्वच्छ भविष्य₹ की भावना के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आयोजन में ऐरण्ड, नीम, ऐलोवेरा आदि औषधीय पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्षा रूपा धोका, मंत्री सुनीता सेठिया, सदस्य गण तथा राधा मोहन कॉलोनी की अध्यक्ष सुनीता एवं संजीव गणोरकर सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सभी ने दोपहर 2:00 से 4:00 बजे तक एसी (Air Conditioner) का उपयोग न करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में सूरजबाई चंडालिया की विशेष उपस्थिति रही। अंत में समिति ने सभी उपस्थितजनों एवं कर्मचारियों का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

विश्व शांति के लिए नमस्कार महामंत्र का जप

पर्वत पाटीया। तेरापंथ युवक परिषद् पर्वत पाटीया द्वारा सत्र 2025-26 का प्रथम कार्यक्रम मूक जीवों की आत्म शांति व विश्व शांति के लिए नमस्कार महामंत्र का सामूहिक जप स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। जप में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य व सभा मंत्री प्रदीप गंग, तेयुप अध्यक्ष अमित बुच्चा, तेयुप पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ महिला मंडल की उपस्थिति रही। एक घंटे नमस्कार महामंत्र के जप के पश्चात सभी ने तीन लोगस्स का ध्यान किया। अन्त में तेयुप मंत्री अशोक कोचर ने आभार ज्ञापन किया।

स्मार्ट बोर्ड का अनावरण

दिल्ली। अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय की कक्षा में स्मार्ट बोर्ड लगवाने का कार्य ए बी सी एल इंफ्रास्ट्राचकर प्राइवेड लिमिटेड (जोधराज बैद) के आर्थिक सौजन्य से सम्पूर्ण हुआ। बोर्ड के अनावरण जोधराज बैद द्वारा किया गया। इस शु भ अवसर पर दिल्ली समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, कमल सेठिया, कल्पना सेठिया, संजय कुमार की उपस्थिति रही। आए हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत स्कूल के बच्चों ने बैंड वादन एवं तिलक लगा कर किया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल मनदीप कुमार ने अणुव्रत समिति तथा जोधराज बैद के प्रति धन्यवाद प्रेषित किया।

अस्थि परामर्श शिविर का आयोजन

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर के माध्यम से एक दिवसीय अस्थि परामर्श शिविर का आयोजन रायपुर स्थित ATDC में अहमदाबाद के प्रसिद्ध अस्थि विशेषज्ञ डॉ धीरज मरोठी जैन की ओपीडी उपलब्ध कराते हुए किया। इस शिविर का लाभ 29 जनों द्वारा लिया गया। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने परिषद् की ओर से डॉ मरोठी स्वागत अभिनन्दन किया। परामर्श शिविर में लैब में कार्यरत सहायकों का योगदान रहा।

> ❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
>
> – आचार्य श्री महाश्रमण

'प्लग इन टू रूट, टू गेट बेटर फ्रूट' थीम पर कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

तंडियारपेट, चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में, तेरापंथ सभा के तत्वावधान में माण्डोत गार्डन में 'प्लग इनटू रूट, टू गेट बेटर फ्रूट' (Plug into Root, to Get Better Fruit) विषयक कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से हुआ, जिसके पश्चात सभा सदस्यों द्वारा मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया गया। प्रशिक्षण प्रदान करते हुए साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि ₹हमारी शक्ति का मूल स्रोत संगठन है। प्रत्येक कार्यकर्ता का चिंतन, व्यवहार व हर कदम संगठन को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो। आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित तेरापंथ धर्मसंघ समर्पण पर आधारित संगठन है, जिसका प्राणतत्त्व है– 'अहम् विलय' और 'अहंकार विसर्जन'।'

साध्वीश्री ने आगे कहा, ₹हम पद और अधिकारों से अधिक चिंतन के विस्तार द्वारा संघ सेवा में योगदायी बनें। किसी भी संगठन में – चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक – अनुशासन का होना अनिवार्य है। कार्यकर्ता का श्रम संगठन को नवीन ऊर्जा देने वाला हो। मनभेद और मतभेद की गांठों को सुलझाने वाला बनें। हम केवल कार्यक्रम न करें, वास्तविक कार्य करें।'

साध्वीश्री ने कहा कि ₹संगठन का मूल आधार है – अध्यात्म। हम मूल में भूल न करें। जहां श्रद्धा हो, वहां सामंजस्य रखें। 'श्रावक संदेशिका' में उल्लिखित नियमों और तथ्यों की जानकारी प्रत्येक कार्यकर्ता को होनी चाहिए। उलझनों को अध्यात्म के माध्यम से सुलझाया जाए। आत्मनिरीक्षण करते हुए आगे बढ़ें और श्रावक कार्यकर्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाएं।'

प्रश्नोत्तर सत्र में साध्वीश्री ने श्रावक समाज की जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए साध्वी संगीतप्रभा जी ने कहा, ₹तेरापंथ का श्रावक कार्यकर्ता संयमी, त्यागी और कर्तव्यनिष्ठ होता है। हमें संघ के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर संघ-ऋण से उऋण बनने का प्रयास करना चाहिए।' साध्वी भव्ययशा जी ने संगठन के लिए ₹GST₹ की संकल्पना प्रस्तुत की – G अर्थात Gratitude (कृतज्ञता) – कार्यकर्ता के प्रति आदर और प्रमोद भाव रखें। S अर्थात Sacrifice (बलिदान) – सैनिक की भांति संगठन के लिए समर्पित रहें। T अर्थात Trust (विश्वास) – विश्वसनीय बनें, क्योंकि ज्ञान और धन पुनः प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन टूटा हुआ विश्वास दोबारा नहीं जुड़ता। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने ध्यान साधना के माध्यम से नौ मंगल भावनाओं की अनुभूति कराते हुए उपस्थितजनों को भावित किया। तीन घंटे तक चली इस प्रशिक्षण कार्यशाला में चेन्नई के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं सहभागी बने। माण्डोत गार्डन की ओर से पूनमचंद माण्डोत ने विचार प्रकट किए एवं सभा मंत्री गजेन्द्र खांटेड ने सभी का आभार प्रकट किया।

ज्ञानशाला सेमिनार का हुआ आयोजन

यशवंतपुर, बैंगलोर।

डॉ. मुनि पुलकितकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, यशवंतपुर में विशेष ज्ञानशाला सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा, "जीवन को उच्च आदर्शों से युक्त बनाना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। मनुष्य जीवन अनंत शक्तियों का स्वामी है; उसका सामर्थ्य अप्रतिहत होता है। विशेषतः बाल्यावस्था में कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं होता। यह अवस्था आध्यात्मिकता के अंकुरण का सर्वाधिक उपयुक्त समय है।" उन्होंने आगे कहा कि बच्चों में विनय का गुण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि विनम्रता ही जीवन में प्रगति का आधार बनती है। मुनिश्री ने उपस्थित बच्चों को "मुझे विनम्र बनना है, मुझे विद्वान बनना है, मुझे महान बनना है" का संकल्प करवाया।

मुनिश्री ने ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा निस्वार्थ भाव से बच्चों को ज्ञान एवं आध्यात्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयासों की अनुमोदना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। मुनि आदित्यकुमारजी ने बच्चों को ध्यान प्रयोग की विधियाँ सिखाईं। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा यशवंतपुर के अध्यक्ष सुरेश बरडिया ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मीनाक्षी दक ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इस अवसर पर प्रशिक्षिकाएं एवं लगभग 40 विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

प्राथमिक उपचार कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स फिजिकल मिशन इमपावरमेंट के अंतर्गत आपातकालीन परिस्थितियों में प्राथमिक उपचार विषयक कार्यशाला का आयोजन आर्यन मार्केटिंग परिसर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने अभातेयुप से पधारे प्रशिक्षक राकेश दक, आर्यन मार्केटिंग के मालिक राकेश पोखरणा तथा समस्त कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। प्रशिक्षक राकेश दक ने जलने, रक्तस्राव एवं चोकिंग जैसी आपात स्थितियों में प्राथमिक उपचार की उपयोगी जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यदि समय रहते उचित प्राथमिक उपचार दिया जाए, तो गंभीर परिस्थितियों में भी व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु उन्होंने व्यावहारिक उदाहरणों एवं अनुभवों के माध्यम से प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर परिषद् के पदाधिकारी, किशोर मंडल एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में राकेश दक एवं हेमंत पटावरी का जैन पट्ट से सम्मान किया गया। आर्यन मार्केटिंग की टीम और प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मंत्री संजय भटेवरा ने आयोजन को सफल बनाने वाले सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
30 जून - 06 जुलाई, 2025

शैक्षणिक प्रतिभा

सुजानगढ़। जैन तेरापंथ समाज को गौरवान्वित करते हुए शुभ बैद (हैप्पी) ने GAT-B (M.Sc. Biotechnology Entrance Exam) में जनरल-ईडब्ल्यूएस श्रेणी में ऑल इंडिया रैंक-1 प्राप्त कर अप्रतिम सफलता अर्जित की है। शुभ बैद सुजानगढ़ निवासी एवं वर्तमान में फलोदी, राजस्थान प्रवासी पवन बैद व नीतू बैद के सुपुत्र तथा स्वर्गीय बाबूलाल बैद एवं सीमा देवी बैद के पौत्र हैं। वे अपनी इस सफलता का श्रेय देव, गुरु, धर्म के प्रताप एवं नियमित, केंद्रित और अनुशासित अध्ययन को देते हैं। उनकी इस असाधारण उपलब्धि पर समस्त समाज, परिजनों एवं शिक्षकों में हर्ष का वातावरण है। अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार की ओर से शुभ बैद को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

संक्षिप्त खबर

पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में किया वृक्षारोपण

ग्रेटर सूरत। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम सूरत महानगरपालिका और सूरत वन अर्बन फॉरेस्ट के सहयोग से अल्थान भटार क्षेत्र में सम्पन्न हुआ, जिसमें समिति के कार्यकर्ताओं ने सघन वृक्षारोपण किया।

कार्यक्रम से पूर्व तेरापंथ भवन, सिटी लाइट में विराजित आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी के सान्निध्य में पर्यावरण सुरक्षा अभियान के बैनर का अनावरण किया गया। साध्वीश्री ने पर्यावरण संरक्षण को युग की आवश्यकता बताया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मंत्री संजय बोथरा, अर्जुन मेडतवाल, कमलेश गादिया सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम

सूरतगढ़। अणुव्रत समिति व भारतीय जैन संघटना सूरतगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में मुनि विनोद कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अणुव्रत गीत से की गई। मुनि विनोद कुमार जी ने कहा कि असंयमित जीवनशैली और वस्तुओं के दुरुपयोग से प्रदूषण बढ़ता है। अणुव्रत संयमपूर्वक उपयोग की शिक्षा देता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण संभव है। रामेश्वर दयाल तिवाड़ी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने सभी समाजों के लिए छोटे-छोटे नियम दिए, जिन्हें अपनाकर चरित्र निर्माण किया जा सकता है। नीतू बैद ने पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों को रेखांकित किया। अजय जैन ने कहा कि पर्यावरण दिवस सिर्फ एक दिन नहीं, जीवनभर मनाने योग्य है। अनिल रांका ने अणुव्रत के ग्यारह नियमों का उल्लेख करते हुए जल व ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता बताई। अशोक सोनी ने प्लास्टिक के कम उपयोग और कपड़े के थैले अपनाने की अपील की। सुरेंद्र रांका ने आयोजनों में प्लास्टिक गिलास के बजाय स्टील गिलास अपनाने की आवश्यकता बताई। अंत में अध्यक्ष लाजपत राय भाटिया ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में बीजेएस अध्यक्ष भरत ऋषि रांका, बलराम पारिक, रवि मुंदड़ा, हरीश गंग व महिला मंडल की अनेक सदस्याएं उपस्थित रहीं। संचालन भारती सामसुखा ने किया।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं– मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।
– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** मोहित संचेती (सुपुत्र पवन संचेती – सुमन देवी संचेती) एवं बौछरा एडियाई के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से मोहित संचेती के निवास स्थान, साउथ अफ्रीका में जूम मीटिंग से संपादित किया गया। जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़, पंकज आंचलिया एवं विनोद सुराना ने नामकरण का कार्यक्रम सपंन्न करवाया।

■ **पर्वत पाटीया।** जोरावरपुरा (नोखा) निवासी विमल चंद - विमला देवी बुच्चा के सुपौत्र व अभिषेक - हर्षिता बुच्चा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन कुमार बुच्चा व बजरंग बैद ने संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **बेंगलुरु।** सुजानगढ़ निवासी, बैंगलोर प्रवासी अमित सपना नाहटा, पुत्र स्वर्गीय भंवरलाल नाहटा का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक जितेन्द्र घोषल एवं विक्रम दुगड़ ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से सम्पन्न करवाया।

■ **राजराजेश्वरीनगर।** बीकानेर निवासी बैंगलोर प्रवासी कांता बोथरा के पुत्र-पुत्रवधु मोनिश-सपना बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से राजराजेश्वरीनगर स्थित उनके निवास स्थान पर संस्कारक आदित्य मांडोत ने संपन्न करवाया।

■ **जयपुर।** मनीष कुमार खाब्या के नूतन आवास में गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस बेंगानी ने सम्पादित करवाया।

■ **रायपुर।** रायपुर प्रवासी आनंद बुच्चा के नूतन गृह का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संस्कारकों अनिल दुगड़ व सूर्य प्रकाश बैद के सहयोग से करवाया गया।

■ **सूरतगढ़।** चंदा-धनराज नवलखा के नूतन गृह प्रवेश का मंगल शुभारंभ 'जैन संस्कारक' देवेन्द्र डागा और रोहित बैद ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** पवन-पूनम बैंगानी के नूतन गृह का शुभारंभ संस्कारक बजरंग लाल डागा एवं बीरेंद्र बोहरा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नवीन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **अमराईवाडी ओढव।** अहमदाबाद प्रवासी बालचंद चपलोत के सुपुत्र हितेश चपलोत के प्रतिष्ठान जयमंगल एंटरप्राइज का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक दिनेश टुकलिया एवं पंकज डांगी ने परिसम्पन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** रमेश, प्रियांशु पोरवाल के नवीन ज्वैलरी शोरूम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़ द्वारा संपादित करवाया गया।

■ **राजाजीनगर।** जुगराज, धीरेन्द्रकुमार, प्रतीक कुमार श्रीश्रीमाल के नूतन प्रतिष्ठान 'ग्लोबल स्पेस' का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया ने जैन संस्कार विधि की महत्ता का विश्लेषण करते संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **गंगाशहर।** अशोक कोठारी के सुपुत्र भरत कोठारी का शुभ विवाह विजय कुमार ढ़ढ़ा कि सुपुत्री खुशी ढ़ढा. के साथ दादाबाड़ी गंगाशहर में जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक रतनलाल छलाणी, पवन छाजेड़, विनीत बोथरा, देवेन्द्र डागा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष में शहर के न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स परिसर में राष्ट्रीय औद्योगिक सुरक्षा अकादमी के सहयोग से विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें वहां के सभी अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तुलसी अष्टकम के संगान के साथ हुआ। प्रशिक्षिका निर्मला बैद ने योग और ध्यान के महत्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित अधिकारियों को योगाभ्यास द्वारा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक लाभों की जानकारी दी गई। गर्दन, कंधे, मस्तिष्क, एवं हाथों की उपयोगी क्रियाएं करवाई गईं, जिनके लाभ भी विस्तार से बताए गए। विभिन्न आसनों का अभ्यास कराते हुए उनके स्वास्थ्यवर्धक प्रभावों पर चर्चा की गई। मुद्रा विज्ञान, महाप्राण ध्वनि, दीर्घ श्वास, ध्यान और कायोत्सर्ग के प्रयोग कराए गए तथा उनके सकारात्मक प्रभावों को समझाया गया।

सभी अधिकारियों को नशामुक्त जीवन, सद्भावना, मैत्री भावना और शाकाहारी जीवन शैली को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इन मूल्यों के प्रयोगात्मक अभ्यास कराए गए और असंतुलित जीवनशैली से होने वाले नुकसानों की जानकारी दी गई। साथ ही इन बुराइयों को त्यागने के उपाय भी सिखाए गए।

कार्यक्रम के अंत में कमांडर राहुल ने आभार ज्ञापित करते हुए इस प्रकार की प्रेरणादायक गतिविधियों को भविष्य में भी आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जून - 06 जुलाई, 2025

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

होसकोटे

साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का 29वाँ महाप्रयाण दिवस होसकोटे में श्रद्धा और भावपूर्ण वातावरण में इन्द्रचन्द धर्मीचन्द धोका के निवास स्थान पर आयोजित हुआ, जिसमें के.जी.एफ. बेंगलुरु, के.आर. पुरम, टी.सी. पलिया, वाइटफील्ड, मालूर, कोलार आदि क्षेत्रों के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ होसकोटे की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। साध्वी पावनप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य श्री तुलसी एक विलक्षण बालक, विलक्षण संत और विलक्षण आचार्य थे। वे तेरापंथ के नवम अधिशास्ता थे जिन्होंने संघ, समाज और विश्व को बहुआयामी अवदान दिए। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री तुलसी का जीवन आदर्शों की मिसाल है और उनकी गाथाएँ युगों-युगों तक अमर रहेंगी। साध्वीश्री ने कहा कि धर्म को केवल पकड़कर न रखें, बल्कि उसे जीवन में आचरण में लाएं और प्रत्येक व्यक्ति धर्मिक बने। साध्वी आत्मयशाजी ने आचार्य तुलसी को मानवता का मसीहा बताते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी उन्नतयशाजी ने सफलता के सूत्रों पर बोलते हुए कहा कि गुरुदेव तुलसी जीवन के हर क्षेत्र में सफलतम व्यक्तियों में अग्रणी थे। साध्वी रम्यप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन सुचारु रूप से किया। इस अवसर पर होसकोटे महिला मंडल और ज्ञानशाला की सक्रिय भागीदारी रही। महिला मंडल की अध्यक्ष राजकुमारी जैन, सभा अध्यक्ष धर्मीचन्द धोका, इन्द्रचन्द धोका, निशा धोका और नितेश धोका ने अपने भावों की सुंदर अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन ललित चोरडिया द्वारा किया गया। साध्वीश्री के सान्निध्य में "जय तुलसी₹ सवा लाख जाप अनुष्ठान भी सम्पन्न हुआ। रात्रि में "एक शाम तुलसी के नाम" भक्ति संध्या में बेंगलुरु से समागत गायक देवीलाल पितलिया ने सुमधुर संगान कर वातावरण को संगीतमय और भावविभोर बना दिया।

रोहिणी

आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी ने कहा — "तुलसी एक व्यक्ति नहीं, एक विचार थे। वे मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापक थे। उनका वचन वरदान था, चिंतन साधना था और कर्म अवदान था। आगम संपादन, पूर्वाचार्यों का जीवन-लेखन, प्रवचन आदि के माध्यम से उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में हृदय खोलकर कार्य किया। उनका साहित्य पढ़ने पर प्रतीत होता है मानो संस्कारों का सुधा-कलश है। यह अतीत और अनागत का प्रतिबिंब है, युगीन समस्याओं का समाधान है और जीवन का मंगल पाथेय है।"

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण तुलसी अष्टकम् से किया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा — "वे एक शक्तिसंपन्न आचार्य थे। उनकी दृष्टि में जादुई प्रभाव था। अनुशासन की आँख से देखते तो धरती काँप जाती थी, प्रेम की आँख से देखते तो हृदय उल्लास से भर उठता था। आपने पत्थरों को तराश-तराश कर उन्हें प्रतिमा का रूप दे दिया।" साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा — उनके विराट व्यक्तित्व को शब्दों में बाँधना कठिन है। वे शब्दातीत, कालातीत और उपमातीत थे। समारोह में आए हुए समस्त श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत रोहिणी सभा के सभाध्यक्ष विजय जैन ने किया एवं आचार्य तुलसी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, अभातेममं की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगाणी, कमल बैंगाणी, पश्चिम विहार सभा के अध्यक्ष श्यामलाल जैन, मानसरोवर गार्डन के अध्यक्ष नरेन्द्र पारख, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा दीपिका छल्लाणी, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बिमल बैगाणी, अणुव्रत समिति दिल्ली के मंत्री राजेश बैंगाणी, रोहिणी सभा के उपाध्यक्ष बिरधी चन्द जैन, नरपत मालू, अणुव्रत न्यास के ट्रस्टी डालमचन्द्र बैद, शांतिलाल जैन, ज्ञानशाला की परामर्शक मनफूलबाई बोथरा, पीतमपुरा सभा के मंत्री वीरेंद्र जैन, उत्तरी दिल्ली महिला मंडल से प्रवीण सिंघी और हिम्मत राखेचा सहित कई गणमान्य जनों ने तुलसी चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के अंत में रोहिणी सभा के मंत्री राजेन्द्र सिंघी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतनप्रभा जी ने किया।

बालोतरा

साध्वी अणिमाश्रीजी, खतरगच्छ संघ की डॉ. साध्वी विद्युतप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी की सहवर्तिनी साध्वी मधुरयशाजी एवं साध्वी वृन्द के सान्निध्य में गुरुदेव श्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस श्रद्धालु तुलसी भक्तों की उपस्थिति में गरिमामय रूप से आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्रीजी ने श्रद्धासिक्त भावों के साथ कहा कि आचार्य श्री तुलसी समत्वयोग के महान साधक थे। उन्हें मान-सम्मान भी बहुत मिला और विरोधों का सामना भी करना पड़ा, परंतु उन्होंने दोनों ही स्थितियों में संतुलन बनाए रखा। विरोधों की थपेड़ों ने उन्हें कभी खिन्न नहीं किया और मान-सम्मान की ऊँचाइयों ने उन्हें अति उत्साहित नहीं किया। समत्वयोग का साधक ही दोनों परिस्थितियों में संतुलित रह सकता है। आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे, उन्होंने संघ के प्रत्येक सदस्य को विकासोन्मुखी बनाया। आज तेरापंथ धर्मसंघ ने अध्यात्म के क्षितिज पर जो विशिष्ट पहचान बनाई है, उसके मूल में आचार्य तुलसी का तप, श्रम और पुरुषार्थ है। आचार्य श्री तुलसी का स्वप्न हमारा संकल्प बने और उनके अवदानों की सौरभ दिशाओं में प्रसारित हो—यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। डॉ. साध्वी विद्युतप्रभाजी ने कहा कि कोई भी महापुरुष जन्म से महान नहीं होता, वह अपने चरित्र और कर्तृत्व से अमिट हस्ताक्षर छोड़ता है। आचार्य तुलसी के रोम-रोम में परकल्याण की भावना समाहित थी। उन्होंने अपनी साधना से सबको शक्तिशाली और ऊर्जावान बना दिया। वही जीवन सार्थक होता है जो अभिशाप नहीं, वरदान बनकर जिया जाए। आचार्य तुलसी जैन समाज के लिए एक अनुपम वरदान थे। उन्होंने आत्मानुशासन और आत्मसंयम के माध्यम से तीसरी आँख खोलने का प्रयास किया। उनका आंतरिक सौंदर्य उन्हें कालजयी बना गया।

साध्वी मधुरयशाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी श्रम के महासुमेरु थे। उनके जीवन का हर पन्ना पुरुषार्थ की स्याही से लिखा हुआ था। डॉ. साध्वी सुधप्रभाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी विरल कोटि के सिद्धपुरुष थे। वे वज्रसंकल्पी और साधनाशील आचार्य थे। चिंतन, निर्णय और क्रियान्वयन उनके सफलता के मूलमंत्र थे। साध्वी समतयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। बालोतरा महिला मंडल एवं कन्यामंडल ने ₹तुलसी आइडल लीडरशिप₹ की प्रस्तुति दी। मुमुक्षु सैफाली ने गीत का संगान किया। सभा के उपाध्यक्ष धनराज ओस्तवाल एवं तेयुप अध्यक्ष संदीप जैन ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल ने ₹तुलसी अष्टकम्₹ के मंगल संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। मंडल की मंत्री रेखा बालड़ ने विचार व्यक्त किये। सभा मंत्री प्रकाश वैद मुथा ने आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन कुशलतापूर्वक किया।

यशवंतपुर, बैंगलोर

शहर के गंगानगर स्थित जैन स्थानक में साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा यशवंतपुर द्वारा आचार्यश्री तुलसी की 29वीं पुण्यतिथि विसर्जन दिवस के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाई गयी। साध्वी सोमयशाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "आचार्य तुलसी का युग स्वर्णिम युग के नाम से जाना जाता है। उन्होंने भूतकाल की रूढ़ियों, वर्तमान की समस्याओं तथा भविष्य की संभावनाओं पर गंभीर चिंतन किया। उनका नाम विश्वगुरु के रूप में लिया जाता है। हर श्रावक का उनसे आत्मीय संबंध था। आपने पद विसर्जन जैसी अनूठी परंपरा को निभाया और तीन साध्वी प्रमुखाओं का चयन कर समाज में नारी नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने नारी समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न की और अर्हत वंदना के माध्यम से आगमवाणी को घर-घर पहुँचाया। ऐसे महापुरुषों को त्यागमय श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए।" साध्वी डॉ. सरलयशाजी ने कहा, "जैन साधु-साध्वियों के लिए शोध क्षेत्र में सुगमता आचार्य तुलसी की ही देन है। उनका आगम भाष्य व संशोधन में अपूर्व योगदान रहा। वे सहज योगी थे, उनके कार्य अद्वितीय थे।" साध्वी ऋषिप्रभाजी ने सुन्दर संचालन करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी के गुणों को व्याख्यायित किया। कार्यक्रम में "महाप्राण गुरुदेव" गीत का सामूहिक संगान हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल अध्यक्ष मीना दक एवं सभा मंत्री अनिल दक द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया ने परिषद का स्वागत करते हुए आचार्यश्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। यशवंतपुर महिला मंडल की बहनों—संगीता बाबेल, टीना पितलिया, सोनु दक और आशा पितलिया—द्वारा सुंदर शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थी मनन और विदित ने "तुलसी तुलसी मेरे राम" की मनमोहक प्रस्तुति दी। कंचन समदडिया, सीमा चोरडिया, सुमन बाफना, उपासक चंद्रप्रकाश मेहता सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन सभा मंत्री अनिल दक ने किया। आयोजन में बड़ी संख्या में जैन श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

डीडवाना

साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी की पुण्यतिथि पर डीडवाना जैन भवन में एक गरिमामय कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि महिला मंडल द्वारा इस अवसर पर दिया गया विषय ₹विसर्जन से सर्जन की ओर₹ अत्यंत सारगर्भित है। आचार्य श्री तुलसी का संपूर्ण जीवन ही विसर्जनमय रहा। 18 फरवरी 1994 को सुजानगढ़ में उन्होंने आचार्य पद का विसर्जन किया। उस अवसर पर अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि "हम जैसे नेताओं के समक्ष विपरीत परिस्थिति भी आ जाए, तब भी हम सत्ता नहीं छोड़ते, पर आचार्य तुलसी ने सक्रिय और समर्थ होते हुए भी पद का त्याग कर दिया।" उन्होंने न केवल पद का, बल्कि अपने समय का भी विसर्जन किया और सैकड़ों व्यक्तित्वों का निर्माण किया—जैसे आचार्य श्री महाप्रज्ञजी, शासनमाता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी एवं अनेक साधु-साध्वियां। उन्होंने प्रमाद का विसर्जन कर साहित्य का सर्जन किया। आचार्य तुलसी के जीवन को शब्दों में बाँधना मानो गागर में सागर भरने के समान है। साध्वी मौलिकयशाजी ने आचार्य श्री तुलसी की स्तुति करते हुए कहा कि जैसे तुलसी का पौधा पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, वैसे ही आचार्य तुलसी भी आध्यात्मिक ऊर्जा के सजीव स्रोत थे। भगवान महावीर ने चार तीर्थों की स्थापना की, वहीं आचार्य तुलसी ने पाँचवें तीर्थ की स्थापना कर नारी जाति के उत्थान में ऐतिहासिक योगदान दिया। महिला मंडल की वर्तमान उन्नति उन्हीं की महान देन है। साध्वी भावितयशाजी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया। तेरापंथी सभा के मंत्री पवन खटेड़, महिला मंडल मंत्री रचना खटेड़, दिव्या चौपड़ा और बबीता श्रीमाल ने शब्द-चित्र के माध्यम से अपने आराध्य आचार्य की भावपूर्ण स्तुति की। गायक कुलदीप मणोत ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत कर सभा को भावविभोर किया। श्रेयांस संचेती और प्रिंस मणोत ने कविताओं के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। संचालन चार्मी खटेड़ ने किया।

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

चेम्बूर

तेरापंथ सभा भवन के प्रांगण में 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 29वाँ महाप्रयाण दिवस श्रद्धा व समर्पण के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशाल संख्या में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। गुरुचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा — "तेरापंथ धर्मसंघ एक विशाल जैन आध्यात्मिक संप्रदाय है, जिसका सफलतम नेतृत्व करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से असाम्प्रदायिक मानव धर्म की प्रतिष्ठा की। वे एक महान राष्ट्रसंत एवं मानवता के मसीहा थे। वे मौलिकता और परिवर्तन दोनों को महत्व देते थे।" 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी ने आचार्य श्री के तपस्वी जीवन की झलक प्रस्तुत करते हुए कहा — "आचार्य श्री तुलसी मात्र 11 वर्ष की अल्पवय में परम पूज्य अष्टमाचार्य कालूगणि के करकमलों से दीक्षित हुए, तथा 22 वर्ष की आयु में उन्हीं के द्वारा युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किए गए। महाप्रयाण के पश्चात मात्र चार दिन बाद वे तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता के रूप में बिराजित हुए। उन्होंने संपूर्ण भारत में लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर लाखों लोगों को नशामुक्ति और नैतिकता का संदेश प्रदान किया।" 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी तथा साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर स्वरों में श्रद्धांजलि गीतिका की संगीतमय प्रस्तुति दी। महिला मंडल द्वारा समारोह का शुभारंभ हुआ। सभाध्यक्ष रमेश धोका ने स्वागत भाषण देते हुए गुरुदेव के अवदानों की संगीतमय प्रस्तुति प्रस्तुत की। समारोह में सोहनलाल सिंघवी, नरेन्द्र तातेड़, विमल सोनी, ख्यालीलाल तातेड़, मदन तातेड़, प्रकाश पोखरना, प्रकाश श्रीश्रीमाल, मनोहर गोखरू, अर्जुन सोलंकी एवं हस्तीमल डांगी ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं।

किलपॉक

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में विसर्जन दिवस के रूप में श्रद्धा भाव से मनाया गया। मुनिश्री ने आचार्य श्री तुलसी के अवदानों का स्मरण करते हुए कहा— "आचार्य श्री तुलसी अपने युग के एक महान, दूरदर्शी और पारखी पुरुष थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में अनेक ऐतिहासिक योगदान दिए। विशेष रूप से व्यक्तित्व निर्माण में उनका कार्य अद्वितीय रहा, जिससे चतुर्विध संघ की गतिविधियों, कार्यप्रणालियों, संघ-संगठन की सुव्यवस्था तथा धर्म प्रभावना को अद्भुत बल मिला। उन्होंने समसामयिक चिंतन, युगानुकूल अपेक्षाओं तथा परिवर्तन की प्रक्रिया को व्यवहार में उतार कर दिखाया।" मुनि भव्य कुमार जी ने 'नेतृत्व की पाँच कसौटियों' के आलोक में आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। मुनि जयेश कुमार जी ने विनयांजलि अर्पित करते हुए 'शासनश्री' मुनि सुखलाल जी द्वारा सुनाए गए आचार्य श्री तुलसी के जीवन-संस्मरणों को अपनी शैली में साझा किया। उन्होंने आचार्य श्री की सामयिक शिक्षाओं को वर्तमान संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ तुलसी अष्टकम के सामूहिक संगान से हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में नई शाखा – तेरापंथ महिला मंडल, किलपॉक का गठन किया गया। मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला ने अनीता सुराणा को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अनीता सुराणा ने अपनी कार्यकारिणी टीम का परिचय दिया और उन्हें भी विधिवत शपथ दिलवाई। मुनिश्री ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को संघनिष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। संचालन माला कातरेला व आभार ज्ञापन अनीता सुराणा द्वारा किया गया।

बेंगलुरु

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र परिसर, बेंगलुरु में चल रहे अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर के दौरान आचार्य श्री तुलसी का 29वाँ महाप्रयाण दिवस साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में मनाया गया। शिविर में उपस्थित साधकों को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा — "अध्यात्म जगत के ख्यातनाम धर्मगुरु, 20वीं सदी के महानायक, समाज सुधारक और महामानव आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ की धरती पर भोर की पहली किरण बनकर अवतरित हुए। वे धूप की भांति खिले और प्रचंड सूर्य की तरह तपकर इस जगत को तमिस्रा को उजाले से भर दिया। उन्होंने अपनी चिंतन शक्ति और कर्म शक्ति से धर्मसंघ को सशक्त बनाया। वे एक निर्भीक नेता, सजग चेतक और युगद्रष्टा थे। संघर्षों के आगे कभी नहीं झुके और समाज को नए-नए अवदान प्रदान किए।" उन्होंने कहा — "आज का यह दिन 'विसर्जन दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से हम अपने कषायों का विसर्जन करें। आत्म-परिचय के लिए हमें भीतर से हल्का होना आवश्यक है — इसके लिए अहंकार, अशुभ व नेगेटिव भावों का विसर्जन करना होगा।" साध्वी मार्दवश्री जी ने श्वास-दर्शन को विसर्जन का सरल उपाय बताते हुए कहा — श्वास को देखते हुए व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बीमारियों का विसर्जन कर सकता है।" उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य की महत्ता को रेखांकित किया। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने कहा — आचार्य श्री तुलसी महान आचार्य थे। उनका जीवन अवदानों का प्रतीक है। जब महापुरुषों ने अपने दोषों व कषायों का विसर्जन किया, तभी वे महान बन सके। प्रेक्षा प्रशिक्षक एवं साउथ कोऑर्डिनेटर तथा शिविर की संयोजिका वीणा बैद, मुंबई से पधारे प्रेक्षा प्रशिक्षक बिनोद राठौर, प्रेक्षा प्रशिक्षक छत्र सिंह मालू तथा प्रेक्षाध्यान शिविर, बैंगलोर की टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

कांचीपुरम, तमिलनाडु

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा-कांचीपुरम द्वारा किया गया। मुनिश्री ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा - आचार्य श्री तुलसी निर्माण के पुरोधा थे। उन्होंने जितना साहित्य का निर्माण किया, उतना ही साहित्यकारों का भी निर्माण किया। आचार्य तुलसी विराट पुंज थे। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए, जो आज समाज के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं। तेरापंथ के आचार्यों में सबसे अल्प आयु में वे आचार्य बने। धर्मसंघ में ज्ञान और ध्यान की सुरसरिता प्रवाहित की। साधु-साध्वियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया और इसके लिए भारी परिश्रम किया। आचार्य तुलसी के जीवन में अनेक संघर्ष आए, जिनका उन्होंने साहसपूर्वक सामना किया। उन्होंने नारी जाति के उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा रूढ़ि उन्मूलन का क्रांतिकारी कार्य किया। आचार्य तुलसी ऐसे क्रांतिकारी महापुरुष थे, जिन पर आने वाली सदियां गर्व करेंगी। मुनि काव्य कुमार जी ने संचालन करते हुए कहा - आचार्य तुलसी का भाग्य प्रबल था और उन्हें अपने पुरुषार्थ पर गहरा विश्वास था। उन्होंने जो सोचा और कहा, वह करके दिखाया। तेरापंथ सभा कांचीपुरम के अध्यक्ष इंदरचंद धोका ने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल कांचीपुरम की बहनों ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। नवनीत कांठेड़ ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा पल्लावरम के मंत्री राकेश रांका ने अपने विचार व्यक्त किए।

अमर नगर, जोधपुर

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में 29वां आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस, विसर्जन दिवस व अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रदत्त कार्यशाला "अर्हं मंत्र अनुप्रेक्षा" का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने आचार्य श्री तुलसी को राष्ट्र पुरुष बताते हुए कहा कि वे ऐसे क्रांतिकारी संत थे, जिनके समक्ष आते ही कोई भी बात या कार्य अपने आप समाहित हो जाता और जिनका अनुशासन स्वयं परिवर्तन का हेतु बन जाता था। साध्वी शशिप्रभाजी ने कहा—जिस प्रकार फूल मुरझाकर भी अपनी सुवास छोड़ता है, धूप जलकर भी अपनी महक बिखेरता है, उसी प्रकार पुरुषार्थ के धनी आचार्य तुलसी ने अपनी तेजस्विता और ओजस्विता को जैन-जैनेतर समाज में प्रसारित कर दिया। साध्वी रोशनीप्रभा जी ने "अर्हं" शब्द का महत्व समझाते हुए आनंद केंद्र पर प्रयोग द्वारा अर्हं मंत्र अनुप्रेक्षा को उजागर किया।

साध्वी पुण्यदर्शना जी ने विसर्जन दिवस के विविध रूपों का उल्लेख करते हुए होटल, सोशल मीडिया, मोबाइल आदि के विसर्जन की बात कही और कहा कि हम इस माध्यम से सरलता से विसर्जन से सर्जन, संयम और नव निर्माण की ओर अग्रसर हो सकते हैं। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावाला, तेयुप मंत्री देवीचंद तातेड़, महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने भी अपने भाव व्यक्त किए। सम्पूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने प्रत्याख्यान द्वारा गुरु की अर्चना की। महिला मंडल द्वारा उच्चारित तुलसी अष्टकम के मंगलाचरण से हुआ। संचालन तेयुप उपाध्यक्ष मनसुख संचेती ने किया।

असाडा

साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी का 29वाँ महाप्रयाण दिवस असाडा के प्रताप भवन सभागार में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी चंदेरी के अद्वितीय चाँद थे, जिन्होंने अपने दिव्य व्यक्तित्व और असाधारण कर्तृत्व से तेरापंथ धर्मसंघ को ऊँचाइयों पर पहुंचाया। वे हमारे श्रद्धेय थे, हैं और रहेंगे। सहस्रों वर्षों में कभी-कभी ऐसे महामानव का जन्म होता है, जिन्होंने हर दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर आत्मार्थी क्रांतिकारी पुरुष के रूप में पहचान बनाई। वे न केवल दर्शन के ज्ञाता थे, बल्कि हर व्यक्ति के अंतर्मन को छूने वाले संवेदनशील नेता थे। उन्होंने हर कार्य जागरूकता के साथ किया और विरोधी परिस्थितियों में भी कभी अपने कदम पीछे नहीं हटाए। साध्वी कलाप्रभाजी ने कहा कि चंदेरी में जन्म लेकर विश्वपटल पर छा जाने वाले आचार्य तुलसी का जीवन गागर में सागर भरने जैसा है। उनके जीवन को शब्दों में बाँधना मानो सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। वे केवल इंसान नहीं, इंसान के रूप में भगवान थे, जिन्होंने हर व्यक्ति के दिल में स्थान बनाया। साध्वी मनोज्ञयशाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी अद्वितीय साहस के प्रतीक थे। वे मानते थे कि साहस से समय बदला जा सकता है। साहस का अर्थ है—सच के पक्ष में खड़ा होना। वे कठिन और विरोधी परिस्थितियों में भी जुनून के साथ कार्यरत रहे। साध्वी पावनयशाजी ने 'जप तुलसी गुरुवरम' का सुमधुर संगान कर अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। कार्यक्रम की शुरुआत मन्दन भंसाली द्वारा सुमधुर संगीत स्वर-लहरियों के साथ हुई। पीयूष बालड़, दिलीप संकलेचा, ममता भंसाली आदि ने गीत, कविता एवं वक्तव्यों के माध्यम से भावांजलि अर्पित की।

नोखा

तेरापंथ भवन, नोखा में आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में 'विसर्जन दिवस' के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा—"आचार्य तुलसी ने मानव कल्याण के लिए अनेक अवदान दिए। उन्होंने अर्जन के साथ विसर्जन का सूत्र, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और जीने की कला सिखलाई।" साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी व साध्वी प्रभातप्रभा जी ने प्रेरक संस्मरण साझा करते हुए उन्हें विश्व विभूति बताया। कवि इन्द्रचंद बैद, सुनील बैद, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण व जप प्रयोग प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपासक अनुराग बैद ने किया।

संबोधि

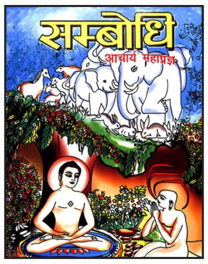

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मेघ ने जानने की बहुत लंबी यात्रा तय की। किन्तु मन की शांति नहीं मिली। ज्ञान का परिचय और संग्रह एक अलग बात है और ज्ञान की अनुभूति भिन्न। प्रत्यक्ष पानी और अन्न की बात अलग है और शब्दमय अन्न तथा पानी की पृथक्। अन्न और पानी शब्द भूख और प्यास शांत नहीं करते। केवल परिचयात्मक तत्व के संबंध में भी यही सत्य है। अनुभूत्यात्मक ज्ञान ही मनुष्य की पिपासा शांत कर सकता है। इसलिए मेघ ने कहा- 'प्रभो। मानसिक सुख, प्रसन्नता की प्राप्ति कैसे हो और कैसे हो प्रमाद से मुक्ति? कृपया मुझे इसका मार्ग-दर्शन दें।'

मेघ जानता है कि वस्तुओं से होने वाला सुख, प्रसाद या आनंद अवास्तविक है। यह क्षणिक है। आया और गया। इसमें स्थिरता नहीं है। मन एक क्षण में प्रसन्न होता है और एक क्षण में अप्रसन्न। एक क्षण सुखी होता है और दूसरे क्षण दुःखी। मुझे वह प्रसाद सुख चाहिए जो स्थायी हो, शाश्वत हो। आचार्य विनय विजयजी ने कहा है-यदि तुम्हारा मन संसार-भ्रमण के दुःख से ऊब गया हो और अनंत आनंद की प्यास तीव्र हो गई हो तो तुम अमृत रस से भरे हुए इस शांत सुधारस काव्य को सुनो।' सुख में पले-पुषे मेघ का मन संसार से उद्विग्न हो उठा और सुख और दुःख दोनों से परे जो प्रसाद आनंद है उसके लिए बेचैन हो उठा। यह प्रश्न उसकी पात्रता को व्यक्त करता है।

भगवान् प्राह

२. अनन्तानन्दसम्पूर्ण, आत्मा भवति देहिनाम्।
तच्चित्तस्तन्मना मेघ!, तदध्यवसितो भव॥

३. तद्भावनाभावितश्च, तदर्थं विहितार्पणः।
भुञ्जानोऽपि च कुर्वाणस्तिष्ठन् गच्छंस्तथा वदन्॥

४. जीवँश्च म्रियमाणश्च, युञ्जानो विषयिव्रजम्।
तल्लेश्यो लप्स्यसे नूनं, मनः प्रसादमुत्तमम्।।

(त्रिभिर्विशेषकम्)

भगवान् ने कहा-आत्मा अनन्त आनंद से परिपूर्ण है। मेघ! तू उसी में चित्त को रमा, उसी में मन को लगा और उसी में अध्यवसाय को संजोए रख।

मेघ! जब-जब तू खाए, कार्य करे, ठहरे, चले और बोले, तब-तब आत्मभावना से भावित बन और आत्मा के लिए सब कुछ समर्पित किए रह। तू जीवनकाल में, मृत्युकाल में और इन्द्रियों का व्यापार करते समय आत्मा की लेश्या-भावधारा से प्रभावित होकर उत्तम मानसिक प्रसाद को प्राप्त होगा।

मन की तीन अवस्थाएं हैं-चित्त, मन और अध्यवसाय। चित्त ज्ञानात्मक अवस्था है। ज्ञान के अनंतर मनन अभ्यासात्मक अवस्था मन है और अभ्यास की चिरपरिचित अवस्था अध्यवसाय है। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

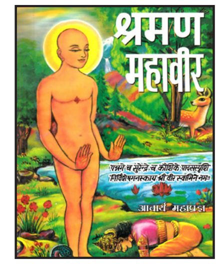

अतीत का सिंहावलोकन

गोशालक के मन में नियति का बीज अंकुरित हो गया। उसने फिर उसी भाषा में सोचा 'जो होने का होता है, वह होकर ही रहता है। मृत्यु के उपरांत सभी जीव अपनी ही योनि में उत्पन्न होते हैं।

गौतम बड़ी तन्मयता से भगवान् की बात सुन रहे थे। उनकी बुद्धि प्रत्येक तथ्य की गहराई तक पहुंच रही थी। वे भगवान् के प्रत्येक वचन को बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ रहे थे। वे अतृप्त जिज्ञासा को शांत करने के लिए बोले- 'भंते! आपने गोशालक को शक्ति के रहस्य सिखलाए, उस विषय में कुछ सुनना चाहता हूं।'

भगवान् ने कहना प्रारम्भ किया 'एक बार हम लोग कूर्मग्राम में विहार कर रहे थे। वहां वैश्यायन नाम का तपस्वी तपस्या कर रहा था। मध्यान्ह का समय । दोनों हाथ ऊपर की ओर तने हुए थे। खुली जटा। सूर्य के सामने दृष्टि। यह थी उसकी मुद्रा। उसकी जटा से जुए भी गिर रही थीं। वह उन्हें उठाकर पुनः अपनी जटा में रख रहा था। यह देख गोशालक ने मुझसे पूछा- 'भंते! वह जुओं का आश्रयदाता कौन है?' उसने इस प्रश्न को कई बार दोहराया। तपस्वी क्रुद्ध हो गया। उसने गोशालक को जलाने के लिए तेजोलब्धि नामक योगशक्ति का प्रयोग किया। उसके मुंह से धुआ निकलने लगा। उसके पीछे आग की तेज लपटें दीख रही थीं। उस समय मैंने अपने शिष्य को भस्म होने देना उचित नहीं समझा। मैंने शीत तेजोलब्धि का प्रयोग कर उसे हतप्रभ कर दिया। गोशालक का जीवन बच गया।

इस घटना का उसके मन पर बहुत असर हुआ। वह तेजोलब्धि को प्राप्त करने के लिए आतुर हो गया। मैंने उसका रहस्य गोशालक को बता दिया। उसने बड़ी तत्परता से तेजोलब्धि की साधना की। वह उसे प्राप्त कर शक्तिशाली हो गया।' गौतम ने पूछा- 'भन्ते! क्या मैं वह रहस्य जान सकता हूं?'

भगवान् ने कहा-'गौतम! जो व्यक्ति छह मास तक निन्तर दो-दो उपवास (बेले-बेले) की तपस्या करता है, सूर्य के सामने दृष्टि रखकर खड़े-खड़े उसका आतप लेता है, पारणे के दिन मुट्ठी भर उबले हुए छिलकेदार उड़द खाता है और चुल्लूभर गर्म पानी पीता है, वह तेजोलब्धि को प्राप्त कर लेता है।'

गौतम जैसे-जैसे भगवान् को सुन रहे थे, वैसे-वैसे उनका मन भगवान् के चरणों में लीन हो रहा था। वे अपने गुरु के गौरवमय अतीत पर प्रफुल्ल हो रहे थे। वे भावावेश में बोले- 'भन्ते! मैंने आपको बहुत कष्ट दिया। पर क्या करूं, इसके बिना अतीत की शून्यता को भर नहीं सकता। भन्ते! आपको मेरी भावना की पूर्ति के लिए थोड़ा कष्ट और करना होगा। भन्ते! महाश्रमण पार्श्व का धर्मतीर्थ आज भी चल रहा है। उसमें सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियां विद्यमान हैं। भगवान् से उनका कभी साक्षात् नहीं हुआ?'

'गौतम! मुझे लोकमान्य अर्हत् पार्श्व के शासन से च्युत कुछ परिव्राजक मिले थे। उनके शासन का कोई साधु नहीं मिला। गोशालक से उनका साक्षात् हुआ था। मैं कुमाराक सन्निवेश के चंपक रमणीय उद्यान में विहार कर रहा था। गोशालक मेरे साथ था। दुपहरी में उसने भिक्षा के लिए सन्निवेश में चलने का अनुरोध किया। मेरे उपवास था, इसलिए मैं नहीं गया। वह सन्निवेश में गया।

उस सन्निवेश में कूपनय नाम का कुंभकार रहता था। वह बहुत धनाढ्य था। उसकी शाला में भगवान् पार्श्व की परम्परा के साधु ठहरे हुए थे। गोशालक ने उन्हें देखा। उनके बहुरंगी वस्त्रों को देख गोशालक ने पूछा- 'आप कौन हैं?' उन्होंने उत्तर दिया-'हम श्रमण हैं। भगवान् पार्श्व के शासन में साधना कर रहे हैं।'

गोशालक बोला- 'इतने वस्त्र-पात्र रखने वाले श्रमण कैसे हो सकते हैं?'

'उसने बहुत देर तक पार्श्वपत्यीय श्रमणों से वाद-विवाद किया। फिर मेरे पास लौट आया। उसने मुझसे कहा- 'भन्ते! आज मैंने परिग्रही साधुओं को देखा है।

'मैंने अन्तर्ज्ञान से देखकर बताया- 'वे परिग्रही नहीं हैं। वे भगवान् पार्श्व के शिष्य हैं।'

'एक बार तम्बाय सन्निवेश में भी पार्श्व की परम्परा के आचार्य नन्दिषेण के श्रमणों से गोशालक मिला था। गौतम! नन्दिषेण बहुत ज्ञानी और ध्यानी श्रमण थे। वे रात्रि के समय चौराहे पर खड़े होकर ध्यान कर रहे थे। उस समय आरक्षिक का पुत्र आया। उसने नन्दिषेण को चोर समझकर मार डाला।'

'भन्ते! यह तो बहुत बुरा हुआ।' (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री चन्नणांजी (उदयपुर) दीक्षा क्रमांक 116

साध्वीश्री विनयवती और बड़ी तपस्विनी थी। उन्होंने तप जप से अपने जीवन को निखारा पर उनके तप का विवरण प्राप्त नहीं होता है।

– साभारः शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का शास्त्र

वैदिक शास्त्रों को 'वेद' और 'बौद्ध' शास्त्रों को 'पिटक' कहा जाता है। जैन शास्त्रों के लिए 'आगम' शब्द का प्रयोग किया जाता है। आगमों के रचयिता विशिष्ट ज्ञानी होते हैं, इसलिए शेष साहित्य से उनकी विलक्षणता और विशिष्टता है। आगमों का पहला वर्गीकरण 'समवायांग' में मिलता है। दूसरा वर्गीकरण 'अनुयोगद्वार' में मिलता है। तीसरा वर्गीकरण नन्दी का है। वह विस्तृत है। चौरासी (८४) आगम और पैंतालीस (४५) आगमों के वर्गीकरण भी उपलब्ध हैं। एक वर्गीकरण में बत्तीस (३२) आगम हैं। वे इस प्रकार हैं-

अंग	उपांग
१. आचार	१. औपपातिक
२. सूत्रकृत	२. राजप्रश्नीय
३. स्थान	३. जीवाजीवाभिगम
४. समवाय	४. प्रज्ञापना
५. भगवती (व्याख्या प्रज्ञप्ति)	५. सूर्यप्रज्ञप्ति
६. ज्ञाताधर्मकथा	६. जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति
७. उपासकदशा	७. चन्द्रप्रज्ञप्ति
८. अन्तकृतदशा	८. निरयावलिका
९. अनुत्तरोपपातिकदशा	९. कल्पावतंसिका
१०. प्रशनव्याकरण	१०. पुष्पिका
११. विपाकश्रुत	११. पुष्पचूलिका
-----	१२. वृष्णिदशा

मूल	
१. दशवैकालिक	१. निशीथ
२. उत्तराध्ययन	२. वृहत्कल्प
३. नन्दी	३. व्यवहार
४. अनुयोगद्वार	४. दशाश्रुतस्कंध
	१. आवश्यक

११+१२+४+४+१= ३२

उपरिनिर्दिष्ट विभागों में स्वतः प्रमाण केवल ग्यारह अंग ही हैं, शेष सब परतः प्रमाण हैं।

ग्यारह अंगों में प्रथम है आचारांग। इसके दो श्रुतस्कन्ध (विभाग) हैं। दूसरा श्रुतस्कंध आचारचूला कहलाता है। प्रथम श्रुतस्कंध 'आयारो' को लक्षित कर यहां कुछ लिखना मुझे अभीष्ट है।

आचारांग सूत्र का प्रारम्भ आत्म जिज्ञासा से होता है। मैं कहां से आया हूं? यह ज्ञान सबको नहीं होता। कुछ जीवों को यह ज्ञान हो जाता है कि मैं अमुक मूल जगह से आया हूं, मैं पूर्व जन्म में अमुक योनि में था। उसके तीन हेतु बतलाए गए हैं-१. स्वस्मृति (पूर्व जन्म की स्मृति), २. पर व्याकरण (प्रत्यक्ष ज्ञानी द्वारा पूर्व जन्म का निरूपण), ३. अन्य के पास श्रवण ।

इस आगम में नौ अध्ययन हैं। सातवां अध्ययन सम्प्रति अनुपलब्ध है। प्रथम अध्ययन 'शस्त्र परिज्ञा' है। आज के 'निःशस्त्रीकरण' शब्द से इसकी बहुत निकटता है। षड्जीवनिकाय-संयम का इसमें मार्गदर्शन है।

इस अध्ययन का एक सूत्रांश अप्रमाद-वृद्धि का आलम्बन सूत्र है– **इयाणि णो जमहं पुमकासी पमाएणं**– अब मैं वह नहीं करूंगा, जो मैंने पहले प्रमाद से किया है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें

https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री प्यारचंदजी (पीतास) दीक्षा क्रमांक 370

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास से ग्यारह दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। ऊपर में 22 दिन की तपस्या की। आपके समग्र तप की तालिका इस प्रकार है–

उपवास/1405, 2/98, 3/6, 4/24, 5/34, 7/1, 8/5, 9/3, 10/1, 11/1, 13/1, 15/1, 16/1, 21/1, 22/1 तप के कुल दिन 2067, जिनके 5 वर्ष, 8 महीने और 27 दिन होते है।

– साभार : शासन समुद्र –

फोरम का 16वां स्थापना दिवस समारोह

दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम दिल्ली ने बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में 16वां स्थापना दिवस ओसवाल भवन, विवेक विहार में हर्षोल्लास से मनाया।

मुख्य अतिथि विधायक संजय गोयल एवं श्रीराम अटल (प्रदेश संयोजक, बीजेपी राजस्थान प्रकोष्ठ, दिल्ली) रहे। मंगलाचरण व टीपीएफ गीत के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष एडवोकेट कविता बरड़िया ने स्वागत भाषण में 'SHINE' कार्यक्रम के तहत किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के अध्यक्ष के. एल. जैन ने टीपीएफ की सतत सेवाओं की सराहना की।

टीपीएफ फाउंडर सदस्य संपतमल नाहटा ने टीपीएफ के विविध आयामों—स्वास्थ्य, शिक्षा, अध्यात्म, नेटवर्किंग—पर प्रकाश डाला। जया राखेचा ने संस्था की यात्रा साझा की, वहीं संजय चोरड़िया ने पूर्व अध्यक्ष के रूप में गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

एनईसी मेंबर श्रेणिक जैन ने शिक्षा और AMKC के कार्यों की जानकारी दी, जबकि अंकित श्यामसुखा ने SHINE गतिविधियों की जानकारी दी। पूर्व अध्यक्ष श्रील लुंकर ने स्वास्थ्य और शिक्षा में योगदान बताया। आनंद बुच्चा, क्रांति बरड़िया, राजेन्द्र सिंघी, सरोज सिपानी आदि गणमान्य अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए और शुभकामनाएँ दीं।

विशेष अतिथि संजय गोयल व श्रीराम अटल ने जैन समाज की सेवाओं की सराहना की। मुनि उदित कुमार जी ने संस्था को समाजहित में कार्यरत रहने का आशीर्वाद प्रदान किया। गौतम डुंगरवाल ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन हिमांशु कोठारी एवं एडवोकेट रीमा जैन ने किया।

मुमुक्षु मंगल भावना समारोह

हिरियुर।

हिरियुर। बालोतरा निवासी एवं उत्तर कर्नाटक गंगावती प्रवासी स्व. प्रकाशचंद बांठिया व किरण बांठिया की सुपुत्री साधना बांठिया की समणी दीक्षा 3 सितंबर 2025 को पूज्यप्रवर के कर कमलों से कोबा, अहमदाबाद में होने जा रही है। मुमुक्षु साधना बांठिया का अभिनंदन समारोह तेरापंथी सभा हिरियुर द्वारा स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया।

समारोह की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। सभा अध्यक्ष जयंतीलाल चौपड़ा ने मुमुक्षु साधना बांठिया का स्वागत करते हुए उन्हें मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। महासभा कार्यसमिति सदस्य तेजराज चौपड़ा ने मुमुक्षु बहन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहन साधना बांठिया ने अपने वक्तव्य में बताया कि कैसे उनके भीतर वैराग्य का बीज अंकुरित हुआ और इस आध्यात्मिक यात्रा में उन्हें किन-किनका सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने उपस्थित श्रावक समाज से निवेदन किया कि वे सदैव यह भावना मन में रखें कि "कब मेरे कर्मों का ऐसा उदय हो कि मैं भी संयम पथ पर अग्रसर हो जाऊँ।" इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा शिल्पा बोकड़िया, विकास बोकड़िया, तनिष्क बोकड़िया, प्रीति बोकड़िया, पार्थ बोकड़िया आदि भाई-बहनों ने गीतिका एवं वक्तव्य के माध्यम से मुमुक्षु बहन के प्रति मंगलभावनाएं प्रकट कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री देवराज चौपड़ा ने किया।

- सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।

- श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।

— आचार्य श्री महाश्रमण

मंगल भावना कार्यक्रम का आयोजन

बालोतरा।

तेरापंथ भवन, सदर बाजार में आचार्य महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी का मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात कन्या मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम से कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव की कृपा से करीब 3 वर्षों तक सिवांची मालानी क्षेत्र में विचरने का अवसर मिला। जसोल, बालोतरा, असाड़ा में चातुर्मास और शेषकाल में भी बालोतरा क्षेत्र में अधिकांश वास का संयोग मिला। यहां का श्रावक समाज अखंड श्रद्धावान, धर्मनिष्ठ है। सभी में संघ व गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण की भावना है। महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति ने बहुत अच्छा कार्य किया है।

साध्वी ध्यानप्रभाजी, साध्वी श्रुतप्रभाजी, साध्वी यशस्वी प्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अंत में साध्वीश्री ने पूरे समाज से खमतखामना कर आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की। साध्वी वृंद ने समूह गीत से अपने भावों को प्रस्तुत किया। सभा के उपाध्यक्ष रामलाल जीरावाला, सिवांची मालानि अध्यक्ष शांतिलाल डागा, धनराज ओस्तवाल, देवीलाल ओस्तवाल, तेयुप उपाध्यक्ष संदीप रेहड़, महिला मंडल अध्यक्षा कंचन संखलेचा, ज्ञानार्थी बालक रेहान श्रीश्रीमाल, आयुष गोलछा, दिव्या सालेचा आदि अनेकों व्यक्तियों ने अपने भावों द्वारा मंगलभावना प्रस्तुत की। महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सभा सहमंत्री राजेश बाफना ने किया।

प्रतिक्रिया विरति से व्यक्ति बनता है महान

चेन्नई।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा उत्तर चेन्नई द्वारा तेरापंथ भवन, तोंडियारपेट में 'एक्शन विदाउट रिएक्शन' कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि मनुष्य जीवन में स्वाभाविक रूप से प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है।

एक्शन का रिएक्शन होता ही है, परंतु दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। जब हम सजग रहते हैं, सहज होते हैं, और स्वयं को तराशते हैं, तो हर प्रतिक्रिया में भी कुछ सकारात्मक खोज लेते हैं और आत्मविकास की दिशा में अग्रसर हो जाते हैं।

साध्वीश्री ने वीतराग कल्प आचार्य मघवागणि, आचार्य महाप्रज्ञजी आदि के जीवन प्रसंगों के माध्यम से प्रेरणा देते हुए कहा कि क्रिया की सकारात्मक प्रतिक्रिया जीवन के नवीन विकास का कारण बन सकती है। इसलिए हम पॉजिटिव सोच के साथ 'विदाउट रिएक्शन' की स्थिति में रह सकते हैं।

साध्वी भव्ययशाजी ने कहा कि विषमता से ह्रास और हानि होती है, जबकि समता से विकास होता है। मन में यह चिंतन रखें कि जब मेरी हरकतें दूसरे सह सकते हैं, तो मैं भी दूसरों की हरकतों को सह सकता हूं। प्रतिक्रिया राग-द्वेष रहित होनी चाहिए।

साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने मधुर गीत के माध्यम से यह संदेश दिया कि हमें जीवन व्यवहार में मीठा और सरस बोलना चाहिए।

प्रतिक्रिया से रहित रहकर ही हम कर्मबंधन से मुक्त हो सकते हैं। उन्होंने 'विदाउट रिएक्शन' की अवस्था के लिए सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का व्यावहारिक अभ्यास भी करवाया।

स्वरूप चंद दांती ने बताया कि तोंडियारपेट में नवदिवसीय अध्यात्म वर्धक प्रवास के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में तेरापंथ सभा उत्तर चेन्नई के अध्यक्ष इंदरचंद डूंगरवाल, मंत्री देवीलाल हिरण, ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंध न्यासी पूनमचंद मांडोत सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। सभी ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मंगलभावनाएं समर्पित कीं।

ज्ञानशाला सत्र में ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए साध्वी संगीतप्रभाजी ने कहा कि ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की शाला है। यह जीवन के सम्यक नियोजन की पाठशाला है।

ज्ञानशाला का ज्ञानार्थी केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक धरातल पर भी परिपूर्ण बनता है। इस अवसर पर ज्ञानार्थियों ने आध्यात्मिक संकल्प स्वीकार किए। प्रशिक्षकों और ज्ञानार्थियों ने साध्वीवृंद की अभिवंदना कर भावपूर्ण श्रद्धा व्यक्त की।

पर्यावरण दिवस का हुआ आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा श्री अरविंदो विद्या मंदिर, बीरूबाड़ी में पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। आचार संहिता का वाचन और स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष बजरंगलाल बैद ने प्रस्तुत किया।

अणुविभा के असम-त्रिपुरा प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया ने कहा कि अणुव्रत छोटे-छोटे नियमों का पिटारा है, जिनका पालन करके संयम के द्वारा हर समस्या का समाधान संभव है। अध्यक्ष बैद ने कहा कि अणुव्रत के नियम देखने में छोटे लगते हैं, परंतु उनकी व्यापकता सार्वभौमिक है।

उन्होंने अपव्यय से बचने की आवश्यकता पर बल देते हुए जल, बिजली आदि संसाधनों के संरक्षण का आग्रह किया। सभी बच्चों को अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने और उसके संरक्षण का संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने पोस्टर प्रदर्शनी और भाषण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका का सम्मान अणुव्रत के असमिया साहित्य के माध्यम से किया गया। साथ ही अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ और पौधारोपण भी किया गया। इसके पश्चात बच्चों के बीच खाद्य सामग्री वितरित की गई।

संक्षिप्त खबर

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का हुआ आयोजन

हैदराबाद। आशीर्वाद वैली, हैदराबाद में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में ₹कैसे करें वीतराग पथ की ओर प्रस्थान₹ विषय पर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन तेयुप हैदराबाद द्वारा किया गया। साध्वी मयंकप्रभा जी और साध्वी मेरुप्रभा जी ने धर्ममय जीवन की प्रेरणा दी। कार्यशाला में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने जीवन के प्रारंभिक साध्वी जीवन के अनुभव साझा करते हुए विनम्रता और वीतराग पथ पर अग्रसर होने का संदेश दिया। मुमुक्षु साधना ने अपनी जीवन यात्रा साझा करते हुए संयम मार्ग को अपनाने की प्रेरणा दी। तेयुप के पदाधिकारियों एवं समाज के गणमान्य जनों ने मुमुक्षु साधना का अभिनंदन किया। संचालन साध्वी दक्षप्रज्ञा जी ने किया।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

साउथ हावड़ा। मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मुमुक्षु भाविका नाहटा का मंगलभावना समारोह का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साउथ हावड़ा द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। मुनिश्री ने कहा कि दीक्षा आत्मजागरण का मार्ग है – असत से सत, अहं से अर्हं की यात्रा। तेरापंथ की दीक्षा का अर्थ है पूर्ण समर्पण और अहंकार का विसर्जन। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। दीक्षार्थी भाविका नाहटा ने संयम जीवन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गुरु चरणों में समर्पित होने को अपना सौभाग्य बताया। मंगलभावना क्रम में सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, तेयुप अध्यक्ष आदेश चोरडिया, शशि नाहर आदि ने अपने विचार रखे। महिला मंडल द्वारा मंगलभावना गीत प्रस्तुत किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री बसंत पटावरी ने किया एवं संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। समारोह में बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

प्रेक्षा प्रवाह : 'शक्ति और शांति की ओर' कार्यशाला

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार प्रेक्षा प्रवाह-शक्ति और शांति की ओर कार्यशाला तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा स्थानीय तेरापन्थ भवन में आयोजित की गई। मंत्र प्रेक्षा कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा की गई जिसके बाद अध्यक्षा पिंकी भंसाली द्वारा स्वागत वक्तव्य हुआ। तत्पश्चात अर्हम मंत्र का जाप एवं अर्हम मंत्र का महत्व प्रेक्षा प्रवाह ग्रुप में उपलब्ध रिकॉर्डिंग का उपयोग करके बताया गया। 'जीरो से हीरो बनने की तैयारी' विषय पर सभी ने अपनी प्रस्तुति देते हुए बताया कि मंगल भावनाओं और अनंत शक्ति से हम अपने जीवन को हर पल भावित कर सकते हैं। कार्यक्रम का सुंदर संचालन प्रज्ञा सुराणा द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री पूनम दुगड़ द्वारा किया कार्यक्रम में लगभग 32 बहनों की उपस्थिति रही। गुरुदेव की महत्ती कृपा से वरिष्ठ उपासक हनुमान मल दुगड़ को मुमुक्षु के रूप में स्वीकार करने पर इरोड महिला मंडल द्वारा अभिनंदन समारोह रखा गया। वर्षीतप तपस्वी अभिषेक बोथरा का भी सम्मान किया गया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

आत्म दर्शन और सत्य दर्शन की सतत प्रक्रिया का नाम है प्रेक्षा ध्यान

गंगाशहर बीकानेर।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के 29वें महाप्रयाण के अवसर पर सप्त दिवसीय कार्यक्रमों के अंतर्गत त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान एवं प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आशीर्वाद भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। इस त्रिदिवसीय आवासीय शिविर का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी के सान्निध्य में हुआ। शिविर का संचालन समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी मननप्रज्ञाजी, प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका सविता जैन एवं राज गुनेचा द्वारा किया गया। 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी ने कहा कि आत्म दर्शन और सत्य दर्शन की निरंतर प्रक्रिया का नाम ही प्रेक्षा ध्यान है। अपने भीतर तक गहराई में झांकना और जागरूक रहना इसका लक्ष्य है।

समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा जी ने बताया कि आचार्य तुलसी ने किसी भी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चार सूत्रीय योजना निर्मित की- 1. अभिप्रेरणा, 2.एकाग्रता, 3. शिथिलीकरण और 4. द्रष्टाभाव। तुलसी शांति प्रतिष्ठान संस्थान के अध्यक्ष गणेश बोथरा ने बताया कि आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान द्वारा आध्यात्मिक, सामाजिक, सेवार्थ गतिविधि निरंतर संचालित होती है। आचार्य तुलसी के 29 वें महाप्रयाण के अवसर पर गुरु चरणों में आध्यात्मिक भेंट देना हमारा लक्ष्य है।

शिविर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने भी पधारकर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मंत्री दीपक आंचलिया ने बताया कि शिविर में ध्यान, आसन, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग एवं इसके सैद्धांतिक और वैज्ञानिक रूप को समझने हेतु वक्तव्य और प्रशिक्षण प्रदान किए गए । शिविर के दौरान आहार संयम, वाणी संयम के अनुरूप दिनचर्या का संचालन हुआ। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान संस्थान के मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग के संयोजक धर्मेंद्र डाकलिया के अनुसार गुरुदेव तुलसी के 29 वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर आयोजित सप्त दिवसीय सभी कार्यक्रमों में साधु-साध्वियों की विशेष प्रेरणा से श्रद्धालु लोगों में धर्म, ध्यान, त्याग, तप, जप, स्वाध्याय आदि का विशेष जोश दिखाई पड़ रहा है। शिविर प्रभारी मानक चंद सामसूखा एवं इंदरचंद सेठिया ने बताया कि गंगाशहर, बीकानेर, उदासर, उदयरामसर, भीनासर, देशनोक, पीलीबंगा, सूरतगढ़, संगरिया मंडी, श्रीरामसर, जयपुर, सिंथल, चंडीगढ़ आदि 13 स्थानों से 79 जनों ने सहभागिता की। प्रेक्षा ध्यान शिविर को सफल बनाने में किशन बैद, भंवर लाल सेठिया, अरिहंत नाहटा, मनीष बाफना, राजू पारख आदि का सराहनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

क्रोध पर नियंत्रण के लिए श्वास पर नियंत्रण आवश्यक

जयपुर।

मुनि तत्वरुचि 'तरुण' ने कहा कि क्रोध जब भी आता है, वह श्वास रूपी घोड़े पर सवार होकर आता है। जिसने श्वास रूपी घोड़े की लगाम थाम ली, उसने क्रोध को अपने वश में कर लिया। अतः क्रोध पर नियंत्रण के लिए श्वास पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।

वे न्यू लाइट कॉलोनी स्थित जैन मंदिर में ₹कैसे करें क्रोध पर नियंत्रण₹ विषय पर प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि क्रोध भी एक प्रकार का नशा है। जो व्यक्ति क्रोध करता है, वह बेभान हो जाता है और अपनी शुद्ध बुद्धि खो देता है।

मुनिश्री ने उदाहरण देते हुए कहा कि माचिस की तीली की तरह क्रोधी व्यक्ति को भी पहले स्वयं जलना पड़ता है। तूलिका के सिर तो होता है, लेकिन दिमाग नहीं होता — जबकि मनुष्य के पास सिर और दिमाग दोनों होते हैं, फिर भी वह आग की तरह क्यों भभकता है?

उन्होंने सुझाव दिया कि व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने दिमाग का उपयोग करे और होश न खोए। इस अवसर पर मुनि तत्वरुचि जी ने क्रोध नियंत्रण के कुछ व्यावहारिक उपाय तथा ध्यान के प्रयोग भी करवाए।

प्रवचन के प्रारंभ में संतों द्वारा पार्श्व स्तुति का संगान किया गया। तत्पश्चात मुनि संभवकुमार जी ने गीत के माध्यम से गुस्सा न करने की प्रेरणा दी और बताया कि गुस्सा स्वयं के लिए ही घातक होता है। कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक वंदन कर क्षमा याचना की।

अंत में नेमीचंद झाड़झुड़ ने समस्त जैन समाज की ओर से मुनि मंडल का आभार प्रकट किया।

जैन प्रश्नमाला के 100 सप्ताह पूर्ण होने पर कार्यक्रम

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जैन प्रश्नमाला के 100 सप्ताह पूर्ण होने पर तेरापंथ भवन, साउथ हावड़ा में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि मोक्ष जीवन का परम लक्ष्य है और उसकी प्राप्ति ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के समन्वय से होती है। उन्होंने कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है और आत्मा में जागरण आता है।

सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने स्वागत भाषण दिया। प्रश्नमाला संयोजक सुशील बाफना ने ज्ञानवृद्धि के इस उपक्रम की जानकारी दी। अनुभव प्रस्तुति में संतोष बांठिया, मंजु दुगड़ व अमरावबाई चोरड़िया ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

सभा द्वारा तीन विशिष्ट प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। यह प्रश्नमाला प्रति रविवार ऑनलाइन आयोजित होती है तथा जैन ज्ञान प्रश्नोत्तरी व जैन तत्वज्ञान प्रश्नोत्तरी पुस्तकों पर आधारित होती है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जून - 06 जुलाई, 2025

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के 106वें जन्मोत्सव पर श्रद्धा प्रणति

उस महाप्रज्ञ का क्या कहना

● मुनि अर्हत् कुमार ●

दुनिया में प्रज्ञ अनेकों हैं, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।
जग में समयज्ञ अनेकों हैं, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।।

तेजस्वी बनकर तुम आए, वर्चस्वी बनकर तुम छाए।ओजस्वी
वक्ता बहु पाए, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।।

गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण था, औ विनय विभूषित जीवन था।
निज का निज पर अनुशासन था, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।।

प्रेक्षा का प्रादुर्भाव हुआ, जन-जन का शांत स्वभाव हुआ।
जिनमें श्रुत का आविर्भाव हुआ, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।।

आगम का अनुसंधान किया, ज्ञानामृत का रस पान किया।
'अर्हत्' जीवन विज्ञान दिया, उस महाप्रज्ञ का क्या कहना।।

लय : दुनिया में देव

उजला प्रभात लाया उजली सौगात है

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

उजला प्रभात लाया उजली सौगात है।
प्रज्ञा के नाथ बने विश्व विख्यात है।
बालू के लाल बने विश्व विख्यात है।।

1. शिव शंकर सम अन्तर्दृष्टि खुली थी,
बुद्धि वरदान बृहस्पति से मिली थी।
कान गणपति सम किससे अज्ञात हैं।।

2. प्रेक्षा के द्वारा लाखों लाखों को तारा,
लंदन जापान में भी गूंजें सितारा।
हिन्दु मुस्लिम सद्भावना प्रख्यात है।।

3. मंत्रों के ज्ञाता और मंत्रों के दाता,
चरण शरण आधि व्याधि मिटाता।
योग महिमा से खिले कितने जलजात हैं।।

4. तुलसी महाप्रज्ञ की जोड़ी अलबेली,
चलती थी अणुव्रत प्रेक्षा रंगरैली।
महातपस्वी महाश्रमण की बढ़ती चढ़ती ख्यात है।।

5. ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः नित,
जाप जपने से बने चित्त विकसित।
'उज्ज्वल' यह मंत्र, मन बने निष्णात है।।

लय - पहली मुलाकात है जी

जीवन रूपी गाड़ी में ब्रेक लगाने की कला विकसित करें

गंगाशहर।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, गंगाशहर द्वारा बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन आशीर्वाद भवन के प्रांगण में 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगल मंत्रोच्चार के पश्चात् समिति की महिला प्रकोष्ठ द्वारा मंगलाचरण से हुई।

वक्ताओं का परिचय उपाध्यक्ष मनोज सेठिया ने दिया। स्वागत एवं विषय प्रवेश वक्तव्य प्रतिष्ठान के कोषाध्यक्ष भैरूदान सेठिया ने दिया।

समिति के अध्यक्ष भंवर लाल सेठिया ने बताया कि कार्यक्रम में 112 विद्यालयों और संस्थानों के प्रतिनिधि, शहर के जाने माने कवि, साहित्यकार आदि लगभग 350 व्यक्तियों ने शिरकत की। साध्वी बसंतप्रभाजी के सान्निध्य में साध्वी संकल्पश्री जी ने कहा कि इंद्रियों और मन को संयम से नियोजित करें। अपनी जीवन रूपी गाड़ी में ब्रेक लगाने की कला विकसित करें।

डॉ. धनपत सिंह रामपुरिया ने पर्यावरण विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि हमें प्रकृति से सभी चीजें मिलती है परंतु अनावश्यक दोहन और अतिक्रमण समस्या की जड़ है। डॉ. चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली ने नशे के संबंध में अपने वक्तव्य में कहा कि नशा संस्कारों को गर्त में ले जा रहा है, विवेक और सद्संगति ही इसका उपचार है।

साध्वी कल्पमाला जी एवं साध्वी रोहितयशा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अंतिम चरण में मुख्य वक्तागण और नवमनोनीत भाजपा जिलाध्यक्ष सुमन छाजेड़ सम्मान आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष गणेश बोथरा, मंत्री दीपक आंचलिया, समिति अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया ने किया।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मीडिया संयोजक धर्मेंद्र डाकलिया ने बताया कि अणुव्रत काव्य धारा के अंतर्गत काव्य रचना करने वाले रचनाकारों का साहित्य और पताका भेंट कर हंसराज डागा, किशन बैद, जतन दुग्गड एवं समिति की महिला प्रकोष्ठ ने सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत गीत संगान में सहभागी विद्यालय और संस्थानों को भी सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन अध्यक्ष भंवर लाल सेठिया ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन समिति के मंत्री मनीष बाफना ने किया। अंतिम चरण में अहमदाबाद में विमान हादसे में मृतक आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप 1 मिनट का मौन रखा गया।

साप्ताहिक प्रवास 'आध्यात्मिक मंत्र अनुष्ठान' के साथ सम्पन्न

उत्तर बेंगलुरु।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री सोमयशाजी का उत्तर बेंगलुरु के विविध क्षेत्रों में प्रथम बार साप्ताहिक प्रवास श्रद्धा, साधना और सेवा का प्रेरणादायी संगम बनकर सम्पन्न हुआ। इस सात दिवसीय प्रवास में साध्वीश्रीजी ने मान्यता टेक पार्क, केंपापुरा, हेब्बाल, कोडिगेहल्ली और सहकारनगर में क्रमशः विहार एवं प्रवास कर धर्म के बीजों को संस्कारों की भूमि में बोया।

इस आध्यात्मिक यात्रा का समापन सहकारनगर में यशवंतपुर सभा के अंतर्गत आयोजित एक विशेष ऱसर्व सिद्धिदायक आध्यात्मिक मंत्र अनुष्ठानऱ के साथ हुआ। अनुष्ठान के दौरान साध्वीश्री ने सामूहिक जाप, ध्यान एवं नवकार मंत्र की शक्ति पर आधारित साधना करवाई। उन्होंने बताया कि मंत्र वह शक्ति है जो मन के विकारों को क्षीण कर आत्मा को शुद्धि की ओर ले जाती है। जब मंत्र श्रद्धा से जपा जाता है, तो वह केवल ध्वनि नहीं रहता – वह चेतना बन जाता है।

इस अवसर पर उत्तर बेंगलुरु के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागी बनकर साधना का लाभ लिया। इस सप्ताहभर के प्रवास के दौरान साध्वीश्री ने मानव जीवन की दुर्लभता, त्याग और तपस्या की आवश्यकता, पारिवारिक सेवा, तथा ज्ञानशाला एवं स्थायी धार्मिक संरचना की प्रेरणा दी।

नवकार महामंत्र की गहन समझ, आराधना एवं व्यवहारिक प्रयोग को लेकर कई सत्र आयोजित किए गए। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से 15–20 नये तेरापंथी परिवारों का संघ से जुड़ाव हुआ तथा बच्चों हेतु ज्ञानशाला स्थापना को लेकर ठोस चर्चा हुई।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

होस्कोटे।

साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। बेंगलुरु से वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक डालमकुमार सेठिया के निर्देशन में रेणु कोठारी ओर पूजा गुगलिया ने सुन्दर ओर प्रभावशाली प्रशिक्षण दिया। प्रेक्षाध्यान का परिचय, आधार, अंग, निष्पति और शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बल के बारे में बताया गया। कायोत्सर्ग ओर श्वास प्रेक्षा का आध्यात्मिक और साइंटिफिक दृष्टिकोण को समझाते हुए प्रैक्टिकल प्रयोग भी करवाया। कार्यशाला में 70 साधकों के साथ ज्ञानशाला के बच्चों की अच्छी उपस्थिति रही। सभी ने प्रेक्षाध्यान के प्रति अपनी रुचि जताई तथा प्रेक्षाध्यान को अपने जीवन का एक अंग बनाने का संकल्प भी लिया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला को सम्बोधित करते हुये साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा आचार्य तुलसी एवम् आचार्य महाप्रज्ञजी का एक महत्वपूर्ण अवदान प्रेक्षाध्यान हमें अपने आपको देखने के लिए प्रेरित करता है। हम कायोत्सर्ग और श्वास प्रेक्षा के द्वारा अपनी जीवन शैली को बदल सकते है, अपने विचारों को पवित्र कर सकते हैं।

साध्वी श्री के सान्निध्य में पच्चीस बोल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा होसकोटे के अध्यक्ष धर्मीचंद धोका ने आभार ज्ञापन किया।

अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर सम्पन्न

बैंगलोर।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा बैंगलोर स्थित आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केंद्र में आठ दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में सानंद सम्पन्न हुआ। इस शिविर में बैंगलोर के अतिरिक्त दिल्ली, भुवनेश्वर, सेलम, वैलुर, चेन्नई, गुवाहाटी एवं सकलेशपुर से कुल 60 शिविरार्थियों ने पंजीकरण कराया। शिविर के समापन अवसर पर सभी शिविरार्थियों ने सामूहिक रूप से प्रेक्षा गीत का संगान किया।

चेतना केंद्र के सुरम्य वातावरण में आयोजित इस शिविर में प्रेक्षाध्यान, आसन-प्राणायाम, शरीर विज्ञान, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, समताल श्वास-प्रेक्षा, योगिक क्रियाएं, गमन योग, अर्हम् न्यास आदि का व्याख्यात्मक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण नियमित रूप से दिया गया। साथ ही अर्हम् जप, मंगल भावना एवं जिज्ञासा समाधान का विशेष क्रम भी चला। प्रशिक्षण का दायित्व साध्वी संयमलता जी, साध्वी मार्दवश्री जी, साध्वी मनीषाश्री जी एवं साध्वी रौनकप्रभाजी ने निभाया, वहीं प्रेक्षा प्रशिक्षक एवं साउथ कोऑर्डिनेटर वीणा बैद ने शिविर संचालन का उत्तरदायित्व सम्हाला। योगाभ्यास, आसन और प्राणायाम का प्रशिक्षण प्रेक्षा प्रशिक्षक विनोद राठौड़ ने एवं ध्यान अभ्यास का प्रशिक्षण छतर सिंह मालू ने दिया। इसके अतिरिक्त एकाग्रता एवं जागरूकता बढ़ाने हेतु एक्टिविटी गेम्स भी आयोजित किए गए। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के रिकॉर्डेड प्रवचनों की श्रृंखला भी विशेष आकर्षण का केंद्र रही। शिविर के द्वितीय दिवस तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर एवं ATDC के सहयोग से सभी शिविरार्थियों का ब्लड शुगर एवं ब्लड प्रेशर परीक्षण भी कराया गया।

शिविर के समापन अवसर पर साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिविर के इन आठ दिनों में आपने जो कुछ सीखा है, उसे यहाँ छोड़कर न जाएं, बल्कि निरंतर अभ्यास द्वारा अपने जीवन में उतारें। तदुपरांत कई शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए।

साउथ कोऑर्डिनेटर एवं शिविर संचालन समिति की संयोजिका वीणा बैद ने टीम के समर्पित सहयोग को शिविर की सफलता का आधार बताया। उन्होंने प्रेक्षा फाउंडेशन की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि बैंगलोर में आयोजित शिविरों में भागीदारी बढ़ना इस बात का प्रतीक है कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का यह अवदान निरंतर प्रगति कर रहा है।

प्रेक्षा प्रशिक्षक विनोद राठौड़ ने कहा कि सभी शिविरार्थियों ने पूरे शिविर के दौरान अनुशासन और उत्साह के साथ भाग लिया, जो उनकी आंतरिक रुचि का प्रतीक है। समापन सत्र में चेतना केंद्र अध्यक्ष ललित मांडोत ने शिविर आयोजन में चेतना केंद्र की सहभागिता पर हर्ष व्यक्त किया तथा आगे भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर शिविर व्यवस्था सहयोगी भंवरलाल मांडोत का सम्मान किया गया। मुमुक्षु भाई मनोज कुमार संकलेचा का भी प्रेक्षा फाउंडेशन टीम द्वारा अभिनंदन किया गया। सभी शिविरार्थियों को प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। उपाध्यक्ष मदनलाल बरमेचा एवं मंत्री लादुलाल बाबेल भी उपस्थित रहे। संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षक छतर सिंह मालू ने किया।

साध्वी वृंद का हुआ नगर प्रवेश

बालोतरा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी अणिमाश्री जी का औद्योगिक नगरी बालोतरा में भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञानुसार, देश की राजधानी दिल्ली से चलकर राजस्थान राज्य के बालोतरा शहर में साध्वी अणिमाश्री जी ठाणा 5 का नगर प्रवेश नाकोडा जैन सराय में हुआ। यहां से तेरापंथ सभा के अंतर्गत रैली द्वारा वे नवकार कॉलोनी स्थित खतरगच्छ भवन पधारीं, जहां खतरगच्छ जैन संप्रदाय की साध्वी डॉ. विद्युतप्रभाश्री जी ने उनका अभिवादन किया।

प्रवचन भवन में स्वागत-अभिनन्दन का कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र से आरंभ हुआ। मंगलाचरण कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज पूज्य गुरुदेव की कृपा से बालोतरा नगर में हमारा प्रवेश हुआ है।

गुरु के आशीर्वाद से शिष्य सफलता के शिखर को स्पर्श करता है। हमें पक्का विश्वास है कि गुरुदेव की ऊर्जा से हम इस क्षेत्र को सरस बनाने में सफल होंगे और हमें यहां अनमोल मोती प्राप्त होंगे।

साध्वीश्री ने कहा कि हम आपकी आत्मा को सजाने और संवारने के लिए आए हैं। चातुर्मास का समय आत्मा को उज्ज्वल, पावन और पवित्र बनाने का अवसर है। आज हमारे नगर प्रवेश पर खतरगच्छ की वरिष्ठ साध्वी बहन डॉ. विद्युतप्रभाश्री जी का पदार्पण भी हुआ है। हमारा भाव-जगत का संबंध प्रगाढ़ बना रहे। हम सब अपनी-अपनी परंपराओं में रहते हुए जिन शासन की सेवा और प्रभावना करते रहें। साध्वीश्री ने अपने करणीय कार्यों की सुंदर विवेचना की।

डॉ. साध्वी विद्युतप्रभाश्री जी ने कहा कि परमात्मा भगवान महावीर की वाणी हमें लक्षित मंजिल तक पहुंचाती है। साधु-संत प्रभु की वाणी का अमृत पान कराने के लिए आपके द्वार तक पहुंचे हैं।

इस बार बालोतरा क्षेत्र को आपके संघ की साध्वी अणिमाश्री जी का चातुर्मास मिला है, इसका पूरा लाभ लेना है। हम बाहर से अलग होते हुए भी भीतर से एक हैं और यह एकता बनी रहनी चाहिए। हम अपने जीवन का हर क्षण संघ सेवा में नियोजित करते रहें।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि साधु-संतों के आगमन से धरती का भाग्य खिल जाता है। बालोतरा की धरा पर संत-महात्माओं का पदार्पण होता रहता है। आज साध्वी अणिमाश्री जी का चातुर्मास नगर प्रवेश हुआ है, इसका सबको पूर्ण लाभ उठाना है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि साध्वी अणिमाश्री जी अमृत के सागर आचार्य महाश्रमण जी से अमृत बूंदों को लेकर आई हैं। वे तपस्विनी रूप में अमृत की स्रोत बनकर आई हैं, इसलिए आप उनका स्वागत कर रहे हैं। यह उर्वर और उपजाऊ भूमि है। साध्वीश्री जी के सिंचन से यहां मोती तैयार होंगे, ऐसा विश्वास है।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका तथा तेयुप स्वर संगम द्वारा गीत के माध्यम से स्वागत-अभिनन्दन किया गया।

मुमुक्षु शेफाली ने साध्वीश्री का अपनी जन्मभूमि पर स्वागत-अभिनन्दन किया। सिवांची मालाणी संस्थान के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष ललित जीरावाला, खतरगच्छ अध्यक्ष अमृतलाल सिंघवी, माणक चोपड़ा, तेयुप अध्यक्ष रौनक श्रीश्रीमाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संखलेचा, टीपीएफ अध्यक्ष रमेश भंसाली तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों ने अपने-अपने विचारों से साध्वीश्री का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रकाश बैद ने किया।

'राइज एंड शाइन' अनुष्ठान में गूंजे मंत्रों के स्वर

राजराजेश्वरी नगर, बैंगलोर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में 'Rise and Shine' अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी नगर में सम्पन्न हुआ। तेजस्विता और आंतरिक शक्ति के संचार हेतु यह अनुष्ठान विशेष रूप से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समवेत उच्चारण से हुआ। साध्वी संयमलता जी ने अपने वक्तव्य में कहा, ' भारतीय संस्कृति भक्ति प्रधान संस्कृति है, और भक्ति का प्राणतत्त्व है – मंत्रों की आराधना। मंत्रों का प्रत्येक अक्षर ऊर्जा, समृद्धि और रोग निवारण की शक्ति से युक्त होता है। यह आत्मा के लिए अजेय रक्षा कवच है, जो सभी प्रकार के दुःखों, क्लेशों और दरिद्रता का निवारण करता है।'

साध्वीश्री ने आगे कहा, ' मंत्रों की साधना व्यक्ति को तेजस्वी, ऊर्जावान और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाती है। यह अनुष्ठान हमारी आत्मिक उन्नति का माध्यम बने।'

साध्वी मार्दवश्री जी ने अनुष्ठान में ॐ का दीर्घ उच्चारण कराते हुए सभा को मंत्रों की तरंगों से भावविभोर किया। मुद्रा विज्ञान, स्वर विज्ञान तथा मंत्रों की लयबद्ध साधना द्वारा आत्मा को ऊर्जावान और चैतन्य बनाने के अनेक प्रयोग कराए। साध्वीश्री ने बताया कि ' मंत्रों की साधना हमारे व्यक्तित्व को पवित्र, प्रभावशाली और आत्मिक रूप से सम्पन्न बनाती है। यह अभ्यास तेज, तप और वैभव को आकर्षित करने की क्षमता रखता है।'

कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गायक मनीष पगारिया एवं गुलाब बाँठिया ने मंत्रयुक्त 'ऋषभाय नमः' गीत द्वारा मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने साध्वीवृंद के त्रिदिवसीय प्रवास की निष्पत्ति के अवसर पर कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का आत्मीय स्वागत किया। कार्यक्रम में महासभा सदस्य प्रकाश लोढ़ा की गरिमामयी उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री गुलाब बाँठिया ने किया।

अर्हम् मंत्र प्रेक्षा से बने अर्हत्

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष पर मासिक कार्यशाला प्रेक्षा प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर के अंतर्गत मंत्र प्रेक्षा अर्हम विषय पर तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा कार्यशाला का आयोजन समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आर्शीवाद भवन में किया गया। समणीजी ने कहा कि अर्हम सर्वोच्च सत्ता का प्रतीक है इसलिए अर्हम बीज मंत्र कहलाता है। समणी जी ने ज्योति केंद्र प्रेक्षा का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभाजी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक राज गुनेचा और सविता जैन, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान अध्यक्ष गणेश बोथरा आदि सदस्यों एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला शिविर में अनुशासन और नैतिक मूल्यों की मिली प्रेरणा

गंगाशहर।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित तीन दिवसीय ज्ञानशाला शिविर का भव्य समापन हुआ।

बोथरा भवन में आरंभ हुआ यह शिविर शांति निकेतन सेवा केंद्र में समापन अवसर तक बच्चों के लिए प्रेरणादायक अनुभव बना रहा।

शिविर के शुभारंभ अवसर पर मुनिश्री ने ज्ञानार्थी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा, "विनय हमारा मूल धर्म है। जो बच्चा विनयवान होता है वह न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करता है, बल्कि समाज में सम्मान और विश्वास भी अर्जित करता है।" उन्होंने आगे कहा कि आत्मज्ञान ही परम ज्ञान है और स्कूल की पढ़ाई केवल सांसारिक ज्ञान देती है जबकि ज्ञानशाला आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर करती है।

उन्होंने गीतिका के माध्यम से बच्चों को अनुशासन और श्रम के महत्व की सीख दी।

शिविर के अंतिम दिवस पर मुनि कमलकुमार जी ने सामायिक की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि ₹एक सामायिक 48 मिनट में साधु के समान बन जाने के तुल्य होती है। इस काल में सभी सांसारिक कर्तव्यों का त्याग कर आत्मशुद्धि की ओर बढ़ा जा सकता है

उन्होंने मौन, स्वाध्याय एवं ध्यान की साधना करने का भी आह्वान किया और कहा कि सत्य, अहिंसा व तप ही धर्म के स्तंभ हैं। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे बच्चों को प्रेमपूर्वक सही मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करें, समय दें और उनकी निरंतरता बनाए रखें, ताकि वे शांत, अनुशासित एवं आत्मिक रूप से समृद्ध बन सकें।

अंतिम दिन 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी, साध्वी विशदप्रज्ञाजी, साध्वी लब्धियशा जी एवं समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा जी के सान्निध्य में शिविर का समापन समारोह संपन्न हुआ।

इस तीन दिवसीय शिविर में 50 से अधिक ज्ञानार्थी बच्चों ने भाग लिया। शिविर को सफल बनाने में तेरापंथी सभा गंगाशहर, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका बहनों, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल एवं ज्ञानशाला की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पृष्ठ 1 का शेष

योग के माध्यम...

धर्म की वह प्रवृत्ति जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है—वही योग बन जाती है। साधुत्व का पूर्ण पालन भी एक उच्चकोटि की योग साधना है। हम सब को योग की आध्यात्मिक दिशा में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज हमारा अहमदाबाद में आना हुआ है। अब अहमदाबाद में चतुर्मास होना है। व्यवस्था समिति के सामने भी एक बड़ा काम है। कब से लगना होता है और अब मौका एकदम सामने हैं। व्यवस्था समिति के कार्यकर्ता हैं, अरविंदजी संचेती हैं, दिमाग एकदम शांति में रहे, दिमाग ठंडा रहे, बात करने में शांति रहे, कार्यकर्ता शांति में रहें, अच्छा उत्साह रहे। मत-भिन्नता स्वाभाविक है, पर निर्णय और क्रियान्वयन में एकता बनी रहनी चाहिए। परस्पर सौहार्द का भाव रहे। पूरा समाज इस चतुर्मास का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास करे, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आज विश्व योग दिवस मनाया जा रहा है। भारतीय प्राचीन परंपरा में योग को अत्यधिक महत्व दिया गया है। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का सेतु है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने न केवल जैन योग पर ग्रंथ लिखा, बल्कि स्वयं योग को जीवन में जीया। उनकी एकाग्रता और आत्मशक्ति का यही रहस्य था। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन में भी योग सधा हुआ है। वे योगनिष्ठ जीवन जीते हैं। जैसा कहा, वैसा किया—यही सच्ची योग साधना है। आप वास्तव में एक महायोगी हैं।

युगप्रधान आचार्यश्री के स्वागत में अहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष अरविंद संचेती, स्व बंगलो के ऑनर दानमल पोरवाल, महेन्द्र पोरवाल, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने ज्ञानार्थियों को मंगल आशीर्वाद भी प्रदान किया। तेरापंथ महिला मण्डल, अहमदाबाद ने स्वागत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि श्री दिनेशकुमारजी ने किया।

विलक्षण युगपुरुष थे...

जैन शासन के लिए जैन आगमों का संपादन का कार्य भी दोनों आचार्यों से जुड़ा हुआ है। आगम कार्य के वाचना प्रमुख आचार्यश्री तुलसी थे और इस कार्य को आगे बढ़ाने में मेरुदण्ड के समान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी थे। उनमें विशेष प्रज्ञा थी। दस आचार्यों में सबसे अधिक आयुष्य प्राप्त करने आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी थे। दोनों ही आचार्य युगप्रधान भी हुए। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी अपने गुरु की विद्यमानता में आचार्य बनने का सुअवसर मिला। जीवन के नवमें दशक में अनेक प्रान्तों की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिन भी उन्होंने प्रवचन किया।

तुलसी और महाप्रज्ञ—दोनों विलक्षण युगपुरुष थे, जिन्होंने न केवल अध्यात्म को ऊँचाई दी, बल्कि नैतिक जीवन की नयी रेखाएं खींचीं। गुरुदेव तुलसी स्वयं फरमाया करते थे—₹तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो और महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो।₹ पूज्यवर ने कहा कि उन्हें दोनों महान गुरुओं के चरणों में रहने, चलने, बैठने और सोने तक का सौभाग्य मिला। भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से उनका आत्मीय संबंध था। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अध्ययन-अध्यापन—आदि उनके द्वारा समाज को दी गई अनुपम देन हैं।

कार्यक्रम में मुनि मदनकुमारजी ने पूज्यवर की अभिवंदना करते हुए अपनी भावना व्यक्त कीं। आचार्यश्री के स्वागत में तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। पश्चिम सभा के पूर्व अध्यक्ष पारसमल कोठारी, प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष छत्रसिंह बोथरा व पश्चिम सभा के उपाध्यक्ष पवन जैन ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

पुरुषोत्तम महावीर

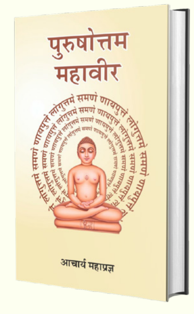

एक क्रांतिकारी अवधारणा: अहिंसा - छब्बीस सौ साल पहले जब अधिकतर समाज सत्ता, जाति और बाहरी पहचान की संरचना में उलझा था, एक व्यक्ति—वर्धमान—ने अपने भीतर की यात्रा शुरू की। उन्होंने यह प्रश्न नहीं उठाया कि कौन श्रेष्ठ है, कौन अधम, किस जाति का है या कौन किस काल में जन्मा है। उनका एकमात्र प्रश्न था: हिंसा या अहिंसा? यह सवाल न केवल व्यक्तिगत नैतिकता से जुड़ा था, बल्कि सामाजिक संरचना को जड़ से हिलाने वाला था। उन्होंने खुद को तपस्या में डुबो दिया—साढ़े बारह वर्षों की कठोर साधना, ताकि इस विचार को आत्मा में उतारा जा सके। महावीर ने समाज को यह बताया कि यदि आप खुद को नहीं बदलते, तो कोई व्यवस्था, कोई राज्य, कोई धर्म आपको नहीं बदल सकता।

ज्ञान और कर्म का सम्मिलन - भगवान महावीर केवल ध्यानस्थ योगी नहीं थे; वे सामाजिक सुधारक भी थे। वे जानते थे कि केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं है और केवल कर्म भी दिशाहीन हो सकता है। उन्होंने दोनों का समन्वय किया। उनके अनुसार, सत्य केवल पढ़ने से नहीं समझा जा सकता—उसे जीना पड़ता है। एक ऐसा ज्ञान जो पाप से विमुख न करे, वह भार है, उन्नति का साधन नहीं। यह बात आज के सूचना युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जहां सूचनाएं अधिक हैं पर अनुभव और आत्मचिंतन की कमी है।

अहिंसा: व्यक्तिगत साधना से वैश्विक नैतिकता तक - महावीर की अहिंसा कोई भावुक या भावनात्मक विचार नहीं था; यह गहन दार्शनिक दृष्टिकोण था। उन्होंने मन, वचन और कर्म तीनों स्तरों पर अहिंसा की व्याख्या की। यह दृष्टि द्वैत और अद्वैत के बीच संतुलन की मांग करती है—जहां आत्मा स्वतंत्र है, पर फिर भी प्रत्येक आत्मा से जुड़ी हुई है। उनका विचार था कि सभी जीव अवध्य हैं—यह न केवल धार्मिक नियम था, बल्कि उस समय की सामाजिक हिंसा, अस्पृश्यता और भेदभाव को चुनौती देने वाला घोष था। उन्होंने कहा कि धर्म का माप धन या कुल से नहीं, त्याग और संयम से होना चाहिए।

जीवन की गहराई में समाधि - आज जब लोग सुख और शांति को बाहरी वस्तुओं में खोजते हैं, महावीर का संदेश अत्यंत स्पष्ट है—सच्चा सुख आत्मा की समाधि में है, न कि उपभोग में। उन्होंने बताया कि आत्मा ही आत्मा की मित्र है—बाहरी मित्रता एक भ्रम हो सकती है यदि वह स्वार्थ से जुड़ी हो। महावीर का जीवन हिमालय की तरह ऊंचा है—सख्त अनुशासन, जड़ मानसिकताओं से मुठभेड़, और अनासक्त होकर जीने की कला। उनका जीवन यह बताता है कि अगर हम अपने भीतर की सत्ता को समझें, तो न केवल व्यक्तिगत मुक्ति संभव है, बल्कि एक न्यायपूर्ण और अहिंसक समाज की नींव भी रखी जा सकती है।

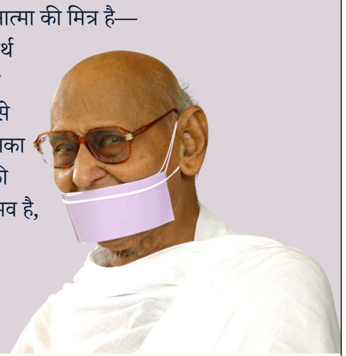

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 15 का शेष

उदार, प्रशस्त और...

यदि चिन्तन के साथ आवेश जुड़ जाए, तो वह अशुभ हो जाता है; वहीं आवेश रहित चिन्तन शुभ और उपयोगी होता है। सोचने की कला का मूल सूत्र है—आवेश में आकर चिन्तन या निर्णय न करें। आवेश में लिए गए निर्णयों पर पश्चाताप करना पड़ सकता है, उन्हें बदलना भी पड़ सकता है। अतः अनावेश और अनाग्रहयुक्त चिन्तन करें। ऐसा चिन्तन करें जिसमें सबके हित की भावना हो। चिन्तन में संकीर्णता न होकर व्यापक दृष्टिकोण हो। जब हम परिवार या समाज को ध्यान में रखकर विचार करते हैं, तो स्वार्थ से परे जाकर परहित की भावना जागृत होती है, जिससे हमारे प्रति भी आदर का भाव उत्पन्न होता है। यदि चिन्तन में उदारता, निस्वार्थता और न्यायप्रियता हो, तो आत्मा निर्मल रह सकती है और व्यवहार भी श्रेष्ठ बन सकता है। संकल्प और विकल्प का अंत वही कर सकता है, जो समता में स्थित होता है। समता में स्थित व्यक्ति की चंचलता नष्ट हो जाती है। हमें भी समता में रहना चाहिए, समता से सोचना चाहिए। समता बहुत ऊँची स्थिति है और यही हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति होनी चाहिए। राग-द्वेष विकृति हैं, जबकि समता प्रकृति है। समता में रहना हमारे लिए हितकारी है। आचार्यश्री के आगमन पर धर्मशाला के करमशीभाई देसाई ने अपनी भावना व्यक्त की।

सहजानन्द की प्राप्ति के लिए आवश्यक है क्रोध, लोभ और भय से मुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

मोटा चीलोड़ा।
19 जून, 2025

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी का विहार कर मोटा चीलोड़ा स्थित सहजानंद ऑफ अचीवर में पधारे। अपने अमृतमय पाथेय के माध्यम से पूज्यवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में शांति की गहन कामना होती है। हर प्राणी सुख और शांति से जीवन व्यतीत करना चाहता है। परंतु सुख की चाह होते हुए भी कई बार वह मार्ग नहीं मिल पाता जिससे परम शांति की प्राप्ति हो सके।

सुख की प्राप्ति हेतु व्यक्ति प्रयास करता है। कभी-कभी उसे सुख प्राप्त भी हो जाता है, परंतु वह टिकता नहीं और फिर से दुःख की ओर झुकाव हो जाता है। सुख दो प्रकार के होते हैं—एक सहज सुख और दूसरा कृत्रिम सुख। सहज सुख किसी परिस्थिति पर निर्भर नहीं होता, जबकि कृत्रिम सुख पूरी तरह परिस्थितियों पर आधारित होता है।

सहजानन्द का अर्थ है—वास्तविक और भीतर से उत्पन्न होने वाला आनंद। हम जितने सहज और सरल होंगे, उतने ही सहजानन्द के समीप होंगे। छल, कपट और कृत्रिमता को त्यागकर सरलता से जीना ही सहजानन्द की दिशा है। शांति में सबसे बड़ी बाधा है—गुस्सा। यदि गुस्सा न आए, तो यह एक बहुत उत्तम स्थिति है। सहजानन्द की प्राप्ति के लिए गुस्से को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। यदि कोई बात गलत कही है तो उसका परिष्कार करें, और यदि सत्य कही है तो भी क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। आलोचना का उत्तर श्रेष्ठ कर्मों से देना चाहिए। किसी के कहने भर से कोई व्यक्ति गलत नहीं हो जाता। यदि कोई गाली देता है, तो उससे भीतर तक विचलित होने की आवश्यकता नहीं।

अत्यधिक लालसा और इच्छाओं को नहीं पालना चाहिए। संतोषी व्यक्ति ही सदा सुखी रहता है। कार्य को निष्काम भाव से करते रहना चाहिए—नाम और प्रसिद्धि की इच्छा से नहीं। यदि तप करें तो आत्मनिर्जरा के लिए करें, कीर्ति या यश के लिए नहीं। धार्मिक दृष्टिकोण से लोभ का त्याग अनिवार्य बताया गया है। व्यक्ति को निर्भीक बनना चाहिए, क्योंकि भय भी आनंद में बाधक बन सकता है। सहजानन्द की प्राप्ति के लिए गुस्सा, लोभ और भय—इन तीनों से मुक्ति आवश्यक है। यह आनंद आत्मा के भीतर से जागृत होता है।

संत तो त्यागी और वैराग्यशील होते हैं, अतः वे सहज रूप से सहजानन्द को प्राप्त कर सकते हैं। परंतु गृहस्थ भी इस दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। साधना और आत्मिक विकास के माध्यम से सहजानन्द की ओर बढ़ना और उसे उपलब्ध करना संभव है।

आचार्यश्री के स्वागत में मंजु लोढ़ा, मुदित लोढ़ा, मंथन जैन, अशोक सुकलेचा, उत्तर गुजरात तेरापंथ समाज के अध्यक्ष गणपतलाल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मण्डल व स्कूल की छात्रा सोनल व पूजा ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। सहजानंद स्कूल की हीर जैन ने भिक्षु अष्टकम् को प्रस्तुति दी। विद्यालय की प्रिंसिपल अर्चना उपाध्याय ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

उदार, प्रशस्त और यथार्थपरक हो चिंतन : आचार्यश्री महाश्रमण

दलानी मुवाड़ी।
17 जून, 2025

भैक्षव गण के शिरोमणि, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी प्रातः लगभग 9 किमी का विहार कर दलानी मुवाड़ी गांव के गोगा मंदिर धर्मशाला में पधारे। अमृतमय देशना प्रदान करते हुए परम पूज्य ने प्रेरणा दी कि मनुष्य के पास सोचने की क्षमता होती है, बोलने की शक्ति होती है और चलने-फिरने जैसी क्रियाओं की सामर्थ्य भी होती है। यह आवश्यक नहीं कि ये सभी क्षमताएँ सभी में समान रूप से हों; इनमें कुछ अंतर या सीमाएँ हो सकती हैं।

हम सोचते हैं और यह सोचने की प्रवृत्ति ऐसी है कि कभी-कभी अनचाहे भी विचार आते रहते हैं। यह मन की चंचलता का परिणाम है कि कई बार अनपेक्षित विचार भी मन में प्रवेश कर जाते हैं। चिन्तन की अधिकता और उसकी मलीनता—ये दो प्रमुख समस्याएँ बन जाती हैं। आवश्यकता है कि हमारा चित्त मलीन न हो, क्योंकि अधिक सोचकर हम कई बार स्वयं को दुःखी बना लेते हैं।

कई बार कुछ ऐसे विचार भी आते हैं जो मन को शांति प्रदान करते हैं। मनुष्य के चिन्तन में आक्रोश नहीं, बल्कि सकारात्मकता होनी चाहिए। हमारा चिन्तन उदार, प्रशस्त और यथार्थपरक हो। हमें खालीपन को नहीं, भरे हुए को देखना चाहिए।

(शेष पेज 14 पर)

जीवन मल नाहटा मेमोरियल ट्रस्ट
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
JMNMT परोपकारं परमोधर्मः

पुरस्कार राशि ₹ 11000/- कक्षा 10 के पात्र विद्यार्थियों हेतु

पुरस्कार राशि ₹ 21000/- कक्षा 12 के पात्र विद्यार्थियों हेतु

जीवन मल जी नाहटा
(1932-2003), सरदारशहर दिल्ली

जीवन प्रगति प्रोत्साहन योजना
(स्टूडेंट्स रिवॉर्ड प्रोग्राम 2025)

घोषणा
5 जून 2025

जीवनमल नाहटा मेमोरियल ट्रस्ट कई वर्षों से विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रतिबद्ध है, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के उत्थान पर ध्यान केंद्रित करना और प्रतिभाशाली और योग्य छात्रों को सशक्त बनाना है। इस पहल के माध्यम से, हम ऐसे अवसर प्रदान करने का प्रयास करते हैं जो उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं, तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि योग्य छात्रों को सफल होने का मौका मिले।
अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि इस वर्ष हमारे ट्रस्ट ने अखिल भारतीय स्तर पर **शैक्षणिक वर्ष 2024-2025 में कक्षा 10 कक्षा 12 उत्तीर्ण करने वाले 1000 मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत** करने का निर्णय लिया है जो निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करते हैं।

पात्रता मापदंड :-
1. आवेदक जैन 'तेरापंथी' होना चाहिए।
2. आवेदक को शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में प्रथम प्रयास में किसी मान्यता प्राप्त शैक्षिक बोर्ड जैसे सीबीएसई, आईसीएसई /आईएससी या किसी राज्य बोर्ड के माध्यम से कक्षा 10 कक्षा 12 उत्तीर्ण होना चाहिए।
3. (क) आवेदक को पांच विषयों में से कम से कम एक में 100% अंक प्राप्त किये हो तथा सभी पांच विषयों का कुल स्कोर 95% या उससे अधिक प्राप्त हो।

या

3. (ख) आवेदक को पांच विषयों में कुल मिलाकर 99% या उससे अधिक अंक प्राप्त हो।

नियम एवं शर्तें :-
1. आवेदन पत्रों पर पूर्णतः पहले आओ पहले पाओ के आधार पर विचार किया जाएगा।
2. अपूर्ण आवेदन सीधे अस्वीकार कर दिए जाएंगे।
3. प्रत्येक कक्षा के अंतर्गत 500 आवेदकों को पुरस्कृत किया जाएगा।
4. आवेदक के माता-पिता में से कोई एक तेरापंथ सभा की किसी स्थानीय संस्था का सदस्य होना चाहिए तथा उसके पास वैध सदस्यता होनी चाहिए।
5. प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करने के बाद, ट्रस्ट पुरस्कार देने के लिए पात्रता मानदंड को पूरा करने वाले मेधावी आवेदकों का चयन करेगा। सिफारिशें मूल्यांकन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं।
6. पुरस्कार देने के लिए, चयनित आवेदकों को सूचित किया जाएगा।
7. पुरस्कार राशि चयनित आवेदक के संबंधित बैंक खाते में जमा कर दी जाएगी।
8. चयनित आवेदकों को प्रमाण पत्र उनके संबंधित डाक पते पर अलग से भेजे जाएंगे।
9. ट्रस्ट बिना कारण बताए किसी भी आवेदन को अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।
10. आवेदन जमा करने की **अंतिम तिथि 30 जून 2025 है** और इसे बढ़ाया नहीं जाएगा।

उपरोक्त मानदंडों के तहत आवेदन करने के लिए कृपया क्यूआर कोड स्कैन करें और आवेदन पत्र पूरा करें।

लक्ष्मीदेवी नाहटा - प्रबंध न्यासी
राजकुमार नाहटा : ट्रस्टी | नरेन्द्र नाहटा : ट्रस्टी | हितेन्द्र नाहटा : ट्रस्टी

"सबको पढ़ाओ, सबको बढ़ाओ"

कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध है जीवन जीने की कला : आचार्य श्री महाश्रमण

लिम्बड़िया।
20 जून, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम पट्टधर, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी अहमदाबाद के सीमावर्ती क्षेत्र लिम्बड़िया स्थित पिनार्कण पब्लिक स्कूल के प्रांगण में पधारे। आर्हत् वाणी की अमृतवर्षा करते हुए महामनीषी ने जीवन में कर्तव्यबोध और उसके पालन के महत्व को रेखांकित किया।

पूज्यवर ने फरमाया कि जीवन में कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध अत्यंत आवश्यक है। जो लोग अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को नहीं समझते, वे अनजाने में ऐसे अनिष्ट की ओर बढ़ सकते हैं जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होती।

साधु का प्रथम कर्तव्य अपने साधुत्व की रक्षा करना है। यदि किसी साधु के पास अन्य ज्ञान न भी हो, पर साधुता का ज्ञान और उसकी सुरक्षा का भाव होना आवश्यक है। इसके पश्चात् वह सेवा अथवा अन्य आध्यात्मिक कार्यों में संलग्न हो सकता है।

गृहस्थों के लिए भी उनके सामाजिक, पारिवारिक और नैतिक कर्तव्यों की अपनी भूमिका होती है। यदि वे अपने कर्तव्य से भी श्रेष्ठ कार्य कर सकें, तो वह और विशेष बन जाता है। किसी आहत को राहत देना, सहायता करना—ये लौकिक सेवाएँ भी कर्तव्य का ही एक रूप हैं। साधु समाज भी आध्यात्मिक सेवा, प्रेरणा और सहयोग के माध्यम से समाज को दिशा दे सकता है। सेवा का संसार में अत्यंत महत्व है। ज्ञानी महान हो सकते हैं, पर जो सेवा में निरंतर तत्पर रहते हैं, वे उससे भी महान माने जाते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में असंख्य यात्राएँ कीं, जनोद्धार का अनुपम कार्य किया—वह सेवा का ही रूप था।

हम सभी को अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए। कर्तव्यबोध को बनाए रखना और अकर्तव्यों से दूर रहना ही जीवन जीने की कला है। ममत्व भाव भी कर्तव्य से जुड़ा होता है—जैसे अपने शिशुओं की रक्षा के लिए हरिणी शेर से भी भिड़ जाती है। शक्ति से अधिक भक्ति का महत्व होता है। धर्म और अध्यात्म के परिप्रेक्ष्य में भी हम कर्तव्य की स्पष्ट परिभाषा कर सकते हैं। यदि हम अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहें, तो यह जीवन को सार्थक और कल्याणकारी बना सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में स्कूल की ओर से अध्यापिका पिंकी और काजल ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : अहमदाबाद प्रवास

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।